समाज विकास

मूल्य : ₹.१० प्रति, वार्षिक ₹.१००

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

• जनवरी २०१२ • वर्ष ६३ • अंक १

सीताराम रुंगटा राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार से सम्मानित साहित्यकार डॉ. उदयवीर शर्मा

बंगाल में बसने वाले मारवाड़ी बंगाल के हो गये हैं : सुदीप बन्द्योपाध्याय

समाज सुधार में सम्मेलन का योगदान सराहनीय : सौगत राय

★ मारवाड़ी महिला सम्मेलन का भव्य अधिवेशन जालना में सम्पन्न

★ ओंकारमल अग्रवाल पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष निर्वाचित

Caring for Land and People...

RUNGTA MINES LIMITED

Mine Owners, Ferro Alloy Producer & Mineral Processors

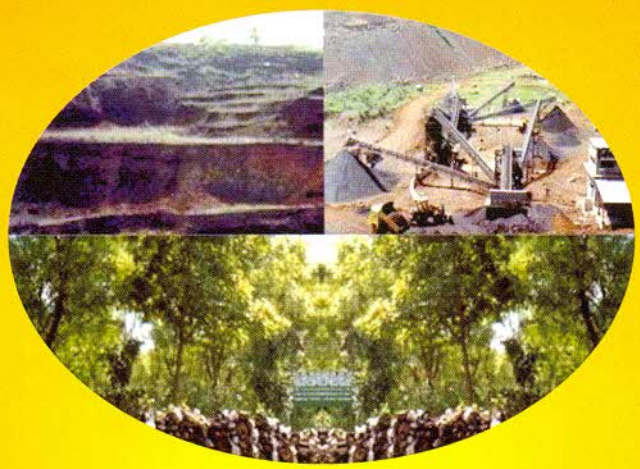

- ***IRON ORE*** *- BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES*
- ***MANGANESE ORE*** *- BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES*
- ***LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE***
- ***SPONGE IRON*** *LUMPS & FINES*

CORPORATE OFFICE

RUNGTA HOUSE, CHAIBASA 833 201, JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256861/ 256761/ 256661; Fax: 91- 6582 256442
Email: rungtas@satyam.net.in, Web Site: www.rungtamines.com, GRAM: "RUNGTA"

REGISTERED OFFICE

8A, EXPRESS TOWER, 42A, SHAKESPEARE SARANI
KOLKATA 700017, INDIA
Phone: 033-2281 6580/3751; Fax: 91-33-2281 5380; Email: rungta_cal@sify.com

MINES DIVISION

RUNGTA OFFICE
MAIN ROAD, BARBIL 758035, DIST- KEONJHAR, ORISSA, INDIA
Phone: 06767- 275221/277481/ 441; Fax: 91-6767-276161
Email: rungta_bbl@yahoo.co.in, GRAM: "RUNGTA"

SPONGE IRON DIVISION

ORISSA
RUNGTA OFFICE
MAIN ROAD, BARBIL 758035
DIST- KEONJHAR, ORISSA, INDIA
Phone: 06767- 27689/277391/021
Fax: 91-6767-277011

JHARKHAND
RUNGTA OFFICE
SADAR BAZAR, CHAIBASA - 833201
DIST- SINGHBHUM(W), JHARKHAND, INDI
Phone: 06582-256621/256321
Fax: 91-6582-257521

समाज विकास

◆ जनवरी २०१२ ◆ वर्ष ६३ ◆ अंक १ ◆ एक प्रति - १० रु. ◆ वार्षिक-१०० रु.

अनुक्रमणिका

क्रमांक	पृष्ठ संख्या
चिट्ठी आई है	४
सम्पादकीय : प्रवासी मारवाड़ी समाज एवं मातृभाषा – ***सीताराम शर्मा***	५
अध्यक्षीय : ईश्वर से वार्तालाप प्रेम-सादगी के साथ – ***हरि प्रसाद कानोड़िया***	७
बदलते जमाने में वैवाहिक संस्कार – ***संतोष सराफ***	९-१०
स्थापना दिवस समारोह की रपट	११-१४
समाज सुधार कमेटी की बैठक में विवाह समारोहों में मद्यपान रोकने का आह्वान	१५
संयक्त मंत्री कैलाश तोदी को पितृशोक	१५
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन एवं महिला सम्मेलन का संयुक्त आह्वान	१७
राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार	१७
ओंकारमल अग्रवाल पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष निर्वाचित	१७
पश्चिम वंग मारवाड़ी सम्मेलन ने करवायी कन्या की शादी	१९
सुकुमार रायचौधरी को विवेकानन्द सेवा सम्मान / मोडिया लिपि पर कार्य	१९
कवि अम्बू शर्मा लिखित राजस्थानी रामायण के छह छंद	१९
परिवार में संस्कार का महत्व – ***संजय सुरेका***	२१-२२
समाज की दिशा और दशा – ***मोजीराम जैन***	२२
जालना में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन का भव्य अधिवेशन	२४-२५
प्रान्तीय समाचार – उत्तराखण्ड – स्थापना दिवस पर कंबल वितरण	२७
लघुकथा – दो नम्बर की ईमानदारी... – ***केसरीकान्त शर्मा केसरी***	२७
राजस्थानी व्यंग्य – इक भोत ऊँची क्लास रो लाल बुझक्कड़ – ***नथमल केडिया***	२८-२९
समाज विकास में वर-वधू परिचय	३०
कविता – **शिव सारदा** / SMS की दुनिया	३१
पुस्तक समीक्षा – चाँद से गुफ़्तगू – ***दिनेश जैन***	३२
शादी-विवाह की रस्मों को महँगा न करें – ***खुशबू बंसल***	३३

स्वत्वावधिकारी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ◆ १५२बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता - ७००००७
फोन : ०३३-२२६८ ०३१९ ◆ email: aimf1935@gmail.com
के लिये श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा
सीडीसी प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित
प्रधान संपादक : सीताराम शर्मा
प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

चिट्ठी आई है

स्थापना दिवस शुभकामना

२५ दिसम्बर, २०११ को कोलकाता में आयोजित अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन तथा ७७ वें स्थापना दिवस समारोह का आमंत्रण सधन्यवाद प्राप्त हुआ। कार्यक्रम के संयोजक होने के नाते आपको इस समारोह के सफलतापूर्वक आयोजन हेतु मेरी शुभकामनाएँ।

मारवाड़ी समाज का देश की प्रगति में उल्लेखनीय योगदान रहा है। देश के औद्योगिक, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक हित से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों में मारवाड़ी समाज ने अपनी अमिट छाप छोड़ी है।

इस प्रकार के आयोजन समाज को संगठित कर एक मंच पर लाने तथा भविष्य की रूप-रेखा तय करने में अत्यंत ही उपयोगी सिद्ध होते हैं।

आशा है आपके कुशल नेतृत्व में मारवाड़ी समाज द्वारा किये जा रहे विभिन्न सामाजिक कार्यों को नई दिशा तथा गति मिलेगी, साथ ही हमारा समाज देश के विकास में भागीदारी कर विकास की नई गाथा लिखने में सफल होगा।

– संतोष रूंगटा
चेयरमेन
रूंगटा ग्रुप ऑफ कॉलेजेस, भिलाई–रायपुर (छत्तीसगढ़)

समाज विकास : पठनीय व सराहनीय

'समाज विकास' का सितम्बर अंक मिला। श्री सीताराम शर्मा का सम्पादकीय 'हाय, महँगाई मार गई' काफी विचारोत्तेजक है जिसमें देश की दशा और दिशा को निर्भीकता एवं निष्पक्षता के साथ उजागर किया गया है। सरकार की आर्थिक नीति से महँगाई का पारा चढ़ता ही जा रहा है और आम आदमी की थाली से दाल-रोटी गायब होती जा रही है। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हरि प्रसाद कानोड़िया का आलेख बहुत ही सुन्दर है जिसमें प्रेम और सादगी अपनाते हुए निष्काम कर्म करने की प्रेरणा दी गई है। मारवाड़ी समाज की गलत छवि दिखलाने वालों के विरूद्ध श्री संतोष सराफ के आलेख में व्यक्त आक्रोश बिलकुल जायज है। कवितायें भ्रष्टाचार के विरूद्ध शंखनाद करती हुई नये समाज के निर्माण का संदेश देती हैं। कुल मिलाकर अंक पठनीय, मननीय और सराहनीय है।

– युगल किशोर चौधरी
चनपटिया, प. चम्पारन (बिहार)

आमरी पर एक खुला पत्र

४ जनवरी २०१२ के समाचारपत्र से पश्चिम बंग राज्य की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का बयान "राज्य में मौत का उद्योग नहीं लगने देंगे – ममता" पढ़ने को मिला। इस संदर्भ में मैं अपनी बात आपकी पत्रिका के माध्यम से समाज व बंगाल की शांतिप्रिय जनता के सामने रखने की इजजात चाहता हूँ।

सर्वप्रथम मैं अपने समाज की तरफ से आमरी घटना में दुर्घटना में शिकार उन सभी लोगों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करते हुए राज्य की माननीय मुख्यमंत्री जी के इस बयान की कड़े शब्दों में प्रतिरोध करता हूँ। दुर्घटना किसी भी समय और किसी के साथ हो सकती है। इसे आतंकवादी शब्दों से तुलना करना या अपराधी शब्दों की संज्ञा देना कहां तक उचित है? मैं मानता हूँ कि आमरी कांड में जो कुछ भी हुआ बहुत दुर्भाग्यजनक है। भोपाल गैस कांड या दिल्ली में सन् १९९७ में उपहार सिनेमा हॉल में हुई घटना भी कुछ इसी प्रकार घटी थी। क्या ये उद्योग भी इसी प्रकार "मौत के उद्योग" माने जाने चाहिए? बिजली के तार से आये दिन आग लगने एवं बड़ी संख्या में लोगों के मारे जाने की घटना हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा बन चुका है। परन्तु हम इस बात को इंकार नहीं सकते की बिजली उद्योग को हम बंद नहीं कर सकते। इसी प्रकार बस या ट्रेन दुर्घटनाओं से लोग अच्छी तरह वाकिफ है। मैं मानता हूँ मारवाड़ी समाज का एक वर्ग पैसे की अंधी दौड़ में समाज के नैतिक मूल्यों जिसमें चिकित्सा व सेवा के क्षेत्र को उद्योग में परिवर्तित कर दिया है। समाज पैसे की दौड़ में अंधा हुए जा रहा है। समाज के कुछ अभिजात्य वर्ग पैसे के बल सभी कुछ खरीद लेना चाहते हैं। समाज को समझना होगा क जिस धन के बल पर वह राज करना चाहता है उसका हर वक्त साथ नहीं देता। लोगों को जेल में बन्द कर हम पीड़ितों की पीड़ा को कम नहीं कर सकते। घटना के समय दो दक्षिण भारतीय नर्स आमरी अस्पताल में थी जो अपने सेवा धर्म पर अपनी बलि देकर मरीजों को बचाने में अन्त तक लड़ती रही। शेष सौ से अधिक कर्मचारी और डॉक्टर उस समय किधर चले गए थे? घटनास्थल पर जितने लोग कार्यरत थे उनपर क्या कार्रवाई की जा रही हैं? राज्य में जितने गैर सरकारी अस्पताल चल रहें हैं इन सबको भी बन्द कर देना चाहिए। सरकार सरकारी अस्पतालों का क्या करेगी? यह सरकार ही निर्णय ले। समाज में काफी असंतोष व्याप्त हो चुका है। इसमें कोई दो मत नहीं है।

– शम्भु चौधरी
एफ.डी. ४५३/२, साल्टलेक सिटी, कोलकाता

पत्रिका में सभी को स्थान मिलें

इस पत्र के साथ मातृभाषा - राजस्थानी शिर्षक से लेख भेज रहा हूँ। अनुभव किया है, पत्रिका में विशिष्ट वर्ग-विशिष्ट व्यक्तियों के वारे में ही अधिक सामग्री रहती हैं। अखिल भारतीय स्तर की संगठन पत्रिका हैं, सभी को स्थान मिलना चाहिए। मैं १५ वर्षों से लेख भेज रहा हूं, अब तक २ लेखों को (वह भी कुछ वर्ष पूर्व) स्थान मिला। विचार करें।

– श्यामसुंदर टावरी
उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय टावरी परिवार
अमरावती

सम्पादकीय

प्रवासी मारवाड़ी समाज एवं मातृभाषा

– सीताराम शर्मा

आधुनिकता से उत्प्रेरित संक्रमण ने मारवाड़ी समाज विशेषकर प्रवासी मारवाड़ी समुदाय को, अपनी लोक मूल संस्कृति से परे धकेल दिया है। इसका प्रधान लक्षण है अपनी मातृभाषा से विरक्ति और क्रमशः उसका परित्याग। यह घोर चिन्ता का विषय है। राजस्थानी अथवा मारवाड़ी भाषायी अंचल से परे प्रवासी मारवाड़ी समुदाय अब सार्वजनिक रूप से तो दूर, अपने परिवार में भी मारवाड़ी भाषा का व्यवहार नही करता। प्रवासी समाज फलस्वरूप अपनी लोक संस्कृति से विच्छन्त हो गया है। भावों का संप्रेषण लोक भाषा से ही होता है। भावों से संस्कार बनते हैं, जिनसे लोक संस्कृति जन्म लेती है, निरूपित, विकसित एवं संरक्षित होती है। अर्थात लोक भाषा ही लोक संस्कृति से जोड़ती है। लोकभाषा के तिरोहित होते चलते लोकगीत भी तिरोहित हो चले है। मारवाड़ी अंचल की कलाओं से तो प्रवासी मारवाड़ी समुदाय का विशेष परिचय हो ऐसा नही लगता है।

आवश्यकता है कि प्रवासी मारवाड़ी समाज को, अपनी भाषा – मारवाड़ी भाषा को – अपने नैतिक जीवन-व्यवहार में, अपने घर परिवारो में पूर्ववत पूर्णता से अपनाना चाहिये। मारवाड़ी समाज की मौलिकता के संरक्षण की यह प्रथम शर्त है। हमें अपने विश्वमान्य दार्शनिक भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्लि राधाकृष्णन के इन शब्दों को स्मरण करना चाहिये कि, "हमारी कुछ उपभाषाएं करोड़ों देशवासीयों द्वारा बोली जाती है जिनकी सांस्कृतिक प्रगति केवल उनकी भाषाओं में ही हो सकती है।" मारवाड़ी भाषा के संबंध में विख्यात भाषा शास्त्री डॉ. सुनीति कुमार चाटुर्ज्या का यह आह्वान भी स्मरणीय है, "अपनी मातृभाषा राजस्थानी का स्थान फिर ऊँचा करों, इससे अपनी मानसिक उन्नति करो और हृदय को उद्‌भाषित करो।" हमें राजस्थानी भाषा में साहित्य सृजन और उसके प्रकाशन को भी प्रोत्साहित करना होगा। राजस्थानी भाषा में अधिकाधिक पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन हो एवं उन्हे हर प्रकार का संरक्षण एवं सहयोग प्रदान किया जाये। साथ-साथ मांगलिक अवसर पर अपनी लोक-कलाओं, लोक परम्पराओं को प्रोत्साहित करें। राजस्थानी अथवा मारवाड़ी भाषा को संविधान की आठवी सूची मे सम्मिलित कराने के लक्ष्य की पूर्ति भी भाषायी पुर्नजागरण से ही होगी।

मारवाड़ी सम्मेलन ने इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिये लगातार प्रयास किये हैं। सम्मलेन कई वर्षों से राजस्थानी भाषा के प्रचार प्रसार के लिये विशेष रूप से सचेष्ट है। राजस्थानी सहित्यकारों को प्रोत्साहित करने हेतु सम्मेलन वार्षिक पुरस्कार देता है। गत वर्ष सम्मेलन ने राजस्थानी व्याकरण का प्रकाशन किया है। घर-घर मे राजस्थानी भाषा में पढ़ने-पढ़ाने का अवसर प्राप्त हो इसी ओर कदम बढ़ाते हुए सम्मेलन के मुखपत्र 'समाज विकास' में प्रत्येक माह कुछ पृष्ठ राजस्थानी भाषा मे प्रकाशित करने का निर्णय लिया है जिसका पाठकों ने हार्दिक स्वागत किया है। 'समाज विकास' के पाठक अब राजस्थानी भाषा मे अपनी रचनाएं भेज सकते है। ●

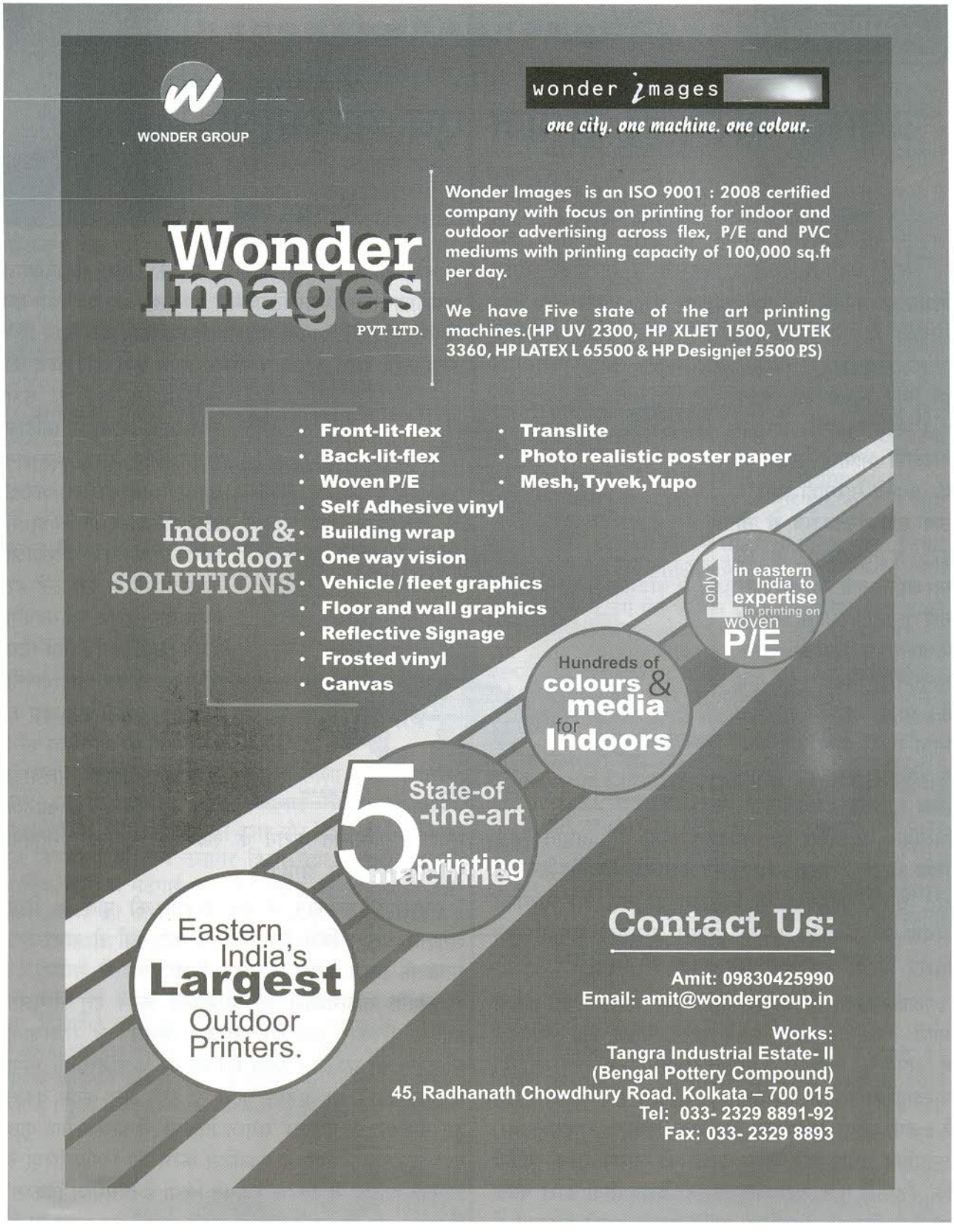
WONDER GROUP
wonder images
one city. one machine. one colour.
Wonder Images
PVT. LTD.
Wonder Images is an ISO 9001 : 2008 certified company with focus on printing for indoor and outdoor advertising across flex, P/E and PVC mediums with printing capacity of 100,000 sq.ft per day.
We have Five state of the art printing machines.(HP UV 2300, HP XLJET 1500, VUTEK 3360, HP LATEX L 65500 & HP Designjet 5500 PS)
Indoor & Outdoor SOLUTIONS
• Front-lit-flex
• Back-lit-flex
• Woven P/E
• Self Adhesive vinyl
• Building wrap
• One way vision
• Vehicle / fleet graphics
• Floor and wall graphics
• Reflective Signage
• Frosted vinyl
• Canvas
• Translite
• Photo realistic poster paper
• Mesh, Tyvek,Yupo
only 1 in eastern India to expertise in printing on woven P/E
Hundreds of colours & media for Indoors
5 State-of-the-art printing machine
Eastern India's Largest Outdoor Printers.
Contact Us:
Amit: 09830425990
Email: amit@wondergroup.in
Works:
Tangra Industrial Estate- II
(Bengal Pottery Compound)
45, Radhanath Chowdhury Road. Kolkata – 700 015
Tel: 033- 2329 8891-92
Fax: 033- 2329 8893

अध्यक्षीय

ईश्वर से वार्तालाप प्रेम-सादगी के साथ

– हरि प्रसाद कानोड़िया

नया साल की राम राम।

हम यदि प्रयास करें तो ईश्वर के साथ रह सकते है और उनसे बात कर सकते हैं। हमे संत होने की जरूरत नहीं है। गृहस्थ जीवन, सादगी, भागवत प्रेम, सेवा उच्चतम है। भगवान श्री कृष्ण ने अपने मित्र, शिष्य अर्जुन से कहें है कि त्याग का अर्थ होता है, अपनी इच्छा को त्यागना। कर्म के फल की कामना नही करना है। महाराज जनक राजा थे, उनके पास राज्य की सारी सुख सुवीधा थी। फिर भी वे एक योगी की तरह जीवन यापन करते थे।

ब्रह्मण्य आधाय कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः।
लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रम् हवाम्भसा।।१०।। अध्याय ५

अर्थात् जो व्यक्ति कर्मफलों को परमेश्वर को समर्पित करके आसक्तिरहित होकर अपना कर्म करता है, वह पापकर्मो से उसी प्रकार अप्रभवित रहता है, जिस प्रकार कमलपत्र जलाशय के कीचड़ जल से। एक कर्म योगी को कर्म करने में खुशी मिलती है, क्योकि वह फल की आशा नहीं करता है। अपना काम निरंतर करते रहता है। जो व्यक्ति फल की इच्छा लेकर कार्य करते है, वे स्वार्थी और मतलबी हो जाते है।

युक्त कर्मफल त्यक्त्वा शान्तिम् आप्नोति नैष्ठिकीम्।
अयुकनः कामकारेण फले सक्तो निबध्यते।।१२।। अध्याय ५

यानि निश्चल भक्ति शान्ति प्रदान करती है। जो व्यक्ति कर्म का फल चाहते है, वे बंध जाते है और वह व्यक्ति त्यागी नहीं होते है। ईश्वर में प्रेम भावना नही रहती है। सच्चे भक्त कर्म करते है, वे फल की इच्छा नही करते है। वे भगवान को चाहते है, उनको पाना चाहते है, उनसे बात करना चाहते है और उनके साथ रहना चाहते है।

St. Augustine कहते है कि हम ईश्वर के पास अपने पैर पे चल कर नहीं जाते है, बल्कि आत्मा के स्नेह से ईश्वर के पास जाते है। जिस तरह सिद्धार्थ शाश्वत सत्य और परम खुशी की खोज में सब कुछ त्याग कर भगवान बुध बनें उसी प्रकार आज भी प्रगति व विकास के लिए खोज जारी है। वह व्यक्ति जो भगवान को पा चुकें है और उनसे बात कर चुकें हैं, उस व्यक्ति के लिए उनकी खोज समाप्त हो गयी है।

बाइबल में हम पढ़ते हैं, कि भगवान ने इन्सान को अपने रूप मे ही बनाया है। Jesus ने त्रिमूर्ति की बात कही है। जिसके तीन अंश परमात्मा, पिता और पुत्र हैं। ईश्वर चेतना बुद्धि, सर्वज्ञानी और सर्वव्यापी है। हिन्दुओं के वेद में जाता है, भगवान अकेले थे और वह अकेलापन महसूस कर रहे थे। तब भगवान ने अपनी इच्छाशक्ति से सृष्टि की रचना की। ईश्वर अपनी सृष्टि का आनंद लेना चाहते है। ईश्वर महान ऊर्जा अथवा ब्रह्मांडीय चेतना के माध्यम से खेलते है। चेतना का अर्थ है, खुद के बारे मे जागरूक होना। विभिन्न धर्म के शास्त्रों में लिखा है कि लोगों ने भगवान से वार्तालाप की है और उनके साथ रहे है। भगवान व्यक्तिगत और अव्यक्तिगत रूप में है। वे प्रकट होते है विभिन्न रूपों में, प्रकाश के रूप में, और वह कंपन के माध्यम से बोलते हैं। निर्माण के समय दुनिया शून्य थी। तभी वहां कंपन हुआ और एक आवाज आई "ओम, आमीन, अमीन"।

भगवान ने मानव और शेर शरीर का रूप धारण कर अफने भक्त प्रह्लाद कि रक्षा की। भगवान विष्णु ने अपने भक्त ध्रुव को आशीर्वाद दिये। संत व्यास जी ने भगवान गणेश जी को वेद लिखाये थे। भगवान शिव जो त्रिदेवों के एक अंश है, उन्होने अपने भक्तों को आशीर्वाद दिया है। स्वामी विवेकानंद जी के अनुसार हिन्दु धर्म ही सारे धर्मों की जननी है। संत तुलसी दास जी कहते है, ईश्वर साकार और निराकार है। मोहम्मद पैगंबर, अहुरा मज्दा, गौतम बुद्ध, चैतन्य महाप्रभु, मीरा, कबीर, सूरदास, परमहंस, योगदानंदा, बामाखापा, राधाकृष्णा ने अपने अपने प्रिय भगवान के साथ बात की है और साथ रहे हैं। परमहंस योगानंद अपनी आत्मकथा मे लिखें है कि वे कई अवसरों पर भगवान से बात किये है। हिन्दुशास्त्र के अनुसार बतलाया गया है कि अगर एक दिन एक रात बिना किसी रुकावट के भगवान को याद करें तो वह जवाब देंगे। स्वामी विवेकानंद अत्यंत गरीबी की अवस्था में थे। उनके पास अपने परिवार के लिये भोजन भी नहीं था। रामकृष्ण के कहने पर स्वामी विवेकानंद मां काली के पास गए। वे मां से कुछ मांग नहीं सके। वे बोले – हे मां मुझे अपना प्यार, ज्ञान और विवेचन शक्ति दो। मां काली ने उन्हें ये सब कुछ दिया। रामकृष्ण कहते है, यदि कोई इन्सान भगवान का नाम ले तो उसका शरीर मन और सब कुछ शून्य हो जाता है। ●

With Best Compliments From :-

M/s ROAD CARGO MOVERS (P) LTD.

1, GIBSON LANE, 2ND FLOOR, SUIT NO :- 211
KOLKATA -700 069

Tele No. : 2210-3480, 2210-3485
Fax No. : 2231-9221
e-mail : roadcargo@vsnl.net

BRANCHES & ASSOCIATES AT

DURGAPUR, HALDIA, CHENNAI, HYDERABAD, BANGALORE, ICHAPURAM, BHIVANDI, COCHI, MUMBAI, VIJAYWADA, COIMBATORE, GAZIABAD, PONDICHERRY, VISAKHAPATNAM

बदलते जमाने में वैवाहिक संस्कार

– **सन्तोष सराफ**, राष्ट्रीय महामंत्री

सृष्टि की रचना के समय से ही सामाजिक व्यवस्था को सुचारू ढंग से संचालित करने की कोशिशें जारी हैं। सामाजिक सुधार का सिलसिला किसी न किसी रूप में, किसी न किसी दृष्टि से आज भी जारी है और आगे भी जारी रहेगा। वर्ण व्यवस्था भी इन्हीं कोशिशों का एक हिस्सा है। ऊंच-नीच, जाति-वर्ग, गरीब-अमीर और छूत-अछूत जैसी बातें, चर्चाएं लम्बे समय से चलती आ रही हैं। कमोबेश आज के दौर में भी इस तरह की चर्चाएं कभी-कभार सुनने को मिल जाया करती हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि सामाजिक संरचना, व्यवस्था और सामाजिक संचालन को लेकर बुनियादी तौर पर कोशिशों का सिलसिला उत्तरोत्तर जारी है। यह बात अलग है कि इन्हीं कोशिशों में से कुछ बातों पर समय-समय पर सवालिया निशान लगता रहा है। सामाजिक चिंतन करने वाले लोग प्रश्नचिन्ह खड़ा करते रहे हैं। आज का समाज बिल्कुल बदला हुआ है, जिस पर आर्थिक और औद्योगिक तरक्की का साफ तौर पर असर भी दिख रहा है। आज के समय में हर चीज पैसे से जोड़ी जाती है। कहा यह भी जाता है कि जब-जब समाज में आर्थिक तरक्की का सिलसिला तेज हुआ, समाज को बदलाव भी देखने पड़े हैं। हमारा समाज शैक्षिक, बौद्धिक, आर्थिक दृष्टि से निश्चित रूप से काफी उन्नत हुआ है। खासकर बौद्धिक स्तर बढ़ने की वजह से सोच-विचार में खुलापन आया है। कम्प्यूटर और इंटरनेट की सुविधाएं विकसित होने से भी समाज का समग्र चेहरा बदला है। जानकारियों की भरमार है, सूचनाएं सहज हो गई हैं। सब कुछ सबकी नजरों के सामने आ गया है। इस तरह से आज के युग में जात, धर्म, वर्ग, मजहब की संकुचित चिंतन धारा से काफी हद तक निकल रहे हैं, निकल चुके हैं या निकलने की कोशिश कर रहे हैं। यह एक अच्छी बात भी है। एक और जब हम चन्द्रलोक में घर बनाने का सपना संजो रहे हैं तो दूसरी ओर संकुचित विचाराधाराओं के जाल में फंसे नहीं रह सकते। पिछले कुछ सालों में समाज में काफी खुलापन देखा जा रहा है। खुलेपन का ही नतीजा है कि लोगों को विचारों की आजादी, अपने भविष्य को संवारने की आजादी तथा अपने भविष्य का जीवनसाथी चुनने की आजादी मिल गई है। वैवाहिक संस्कारों का सनातन धर्म में अत्यन्त महत्व है। समाज आज भी विवाह संस्कार को पवित्र भावना से ग्रहण करता है। पिछले कुछ वर्षों से समाज में प्रेम विवारों का चलन काफी बढ़ा है। युवा पीढ़ी के लोग आपस में एक-दूसरे को परख कर अपना जीवन साथी तय कर लेते हैं, जिन्हें प्रेम विवाह कहा जाता है। माता-पिता या अभिभावक की सहमति के बिना होने वाले विवाहों को अक्सर प्रेम विवाहों की संज्ञा दी जाती है। यह बात दीगर है कि जब बेटा-बेटी एक-दूसरे से प्रेम करते हुए विवाह करने का निश्चय कर लेते हैं तो फिर चाहते न चाहते हुए भी माँ-बाप को अपनी मुहर लगानी पड़ती है। लेकिन इतना तो सच है कि आज भी कोई भी माँ-बाप मन से कभी भी ऐसा नहीं चाहता कि उसकी बेटी या बेटा अपनी मर्जी से प्रेम-विवाह कर ले। हाँ, बेटा-बेटी को अपना जीवन साथी अपनी पसंद का चुनने का हक होना चाहिए, मौका मिलना चाहिए। इस तरह की सोच निश्चित रूप से समाज में बड़ी तेजी से पनप रही है। यही वजह है कि शादी के पूर्व अब लोग बेटा-बेटी से कहने लगे हैं कि वे खुद एक बार देख लें, समझ लें, परख लें। एक समुदाय के लोग दूसरे समुदाय के लोगों के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित करें, जाति, वर्ग, धर्म और मजहब जैसी संकुचित बातें छोड़ दें। इस तरह की बातें बहुत सारे लोग समाज में कहते हुए मिल जाएंगे। लेकिन वह हर बात व्याहारिक दृष्टि से कसौट पर हमेशा खरी नहीं उतरती, जो कहने में, बोलने में, सुनने में अच्छी लगती है। समाज में देखा जा रहा है कि एक जाति के लोग दूसरे जाति के लोगों के साथ वैवाहिक संबंध बना रहे हैं। धर्म और मजहब की दीवारें भी विवाह के मामलों में टूट रही हैं, बंधन और सीमाएं टूटती हुई दिख रही हैं। लेकिन क्या हमने कभी, हमारे समाज ने कभी इस तरह के वैवाहिक संबंधों पर गहराई से गौर किया है। किसी दूसरे प्रांत की किसी दूसरी जाति-समुदाय की बेटी के साथ संबंध करने से क्या व्यवहारिक दृष्टि से दिक्कतें नहीं आ रही हैं? उदाहरण के तौर पर अगर

कोई लड़की बाहर की रहने वाली है और उसकी शादी राजस्थान के किसी लड़के के साथ कर दी जाए तो क्या उस लड़की को राजस्थान के सामाजिक-पारिवारिक परिवेश में तालमेल बैठाना सहज होगा? दरअसल समाज को अपनी कथनी और करनी के बीच के अन्तर को समझना होगा। सामाजिक परिवेश, पारिवारिक परिवेश, रहन-सहन, खान-पान, पहनावा-ओढ़ावा, बोलचाल, पारिवारिक परंपराएं और संस्कार क्या मिल पाएंगे? क्या इस तरह की परिस्थितियों के बीच सामंजस्य स्थापित करना कठिन नहीं होगा? अब वक्त आ गया है जबकि समाज को इन बिन्दुओं पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। किसी दूसरे समुदाय की लड़की जब घर में आती है तो चाहते हुए भी उसे परिवार के माहौल में तालमेल बैठाने में दक्कतें होती हैं। यह एक व्यवहारिक अड़चन सामने दिख रही है, जिसका समाधान खोजना होगा। सिर्फ यह कहने से कि दुनिया बदल चुकी है, जमाना बड़ी तेजी से बदल रहा है, शिक्षा का प्रचार-प्रसार काफी हो चुका है, पढ़े-लिखे समाज में लोगों की सोच बदल चुकी है, इसलिए अब जाति-धर्म, समुदाय और वर्ग का महत्व नहीं रह गया है, काम नहीं चलने वाला है। भविष्य में क्या होगा, आने वाले २५-३० वर्षों में समाज की क्या सूरत बनेगी, किस तरह का सामाजिक ढांचा होगा और किस तरह की सामाजिक सोच पनपेगी, अभी कहना बहुत मुश्किल है। आज जो हो रहा है, दिख रहा है, सोचने-समझने को मिल रहा है, उसके मुताबिक यह कहा जा सकता है कि अपने समाज, समुदाय और जाति में ही वैवाहिक संबंध करने से अच्छा रहेगा। ऐसा करने से एक ही परिवेश, एक ही माहौल और एक जैसी संस्कृति-परंपराएं मिलती हैं, जहां सामंजस्य स्थापित करने में सहूलियत होती है। ●

ॐ आभार ॐ

जीवन मरण परण जग साखी। बिधि पूरब रचना रचि राखी।।
बिधनी रचित नियत संसारा। जो आवत सोइ जावन हारा।।

पं. ताऊ शेखावाटी कृत **श्री खाटू श्याम चरित** की इन चौपाइयों में वर्णित अटल सत्य को स्वीकार करते हुए सूचनार्थ निवेदन है कि हमारे यहां

जगत ताई

श्रीमती ताई शेखावाटण

(धर्मपत्नी - पं. ताऊ शेखावाटी)

का आकस्मिक निधन **दिनांक १७ नवम्बर २०११ (शनिवार)** को हो गया है। हम देश-विदेश में बसे हमारे उन सभी स्वजन एवं इष्ट-मित्रों का आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने विषाद की इस घड़ी में हमें स्वयं उपस्थित होकर अथवा फोन या लिखित सांत्वना-संदेश भिजवाकर ढाढ़स बंधवाया है। हम उन सभी सामाजिक संस्थाओं, साहित्य अकादमियों, पत्र-पत्रिकाओं आदि का भी सहृदय आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने उस ब्रह्मलीन आत्मा की शांति हेतु शोक सभाएं आयोजित कर अथवा समाचार प्रकाशित कर हमे अपने अपनत्व से सराबोर किया है।

विनीत

चंद्रदतः (पुत्र) **सरिता, ममता** (पुत्रवधू)
विष्णुदतः (दामाद) **हेमलता** (पुत्री) **आदित्य, अनुभव** (नाती)
सांवरमल, गोपीराम, रंजन, पूरनमल, बजरंग, (देवर)
चेतन, प्रथम, कुनिका, अंशुल, अनुज (पौत्र-पौत्रियां) एवं
समस्त **मीषण** परिवार गांव - **रामगढ़ शेखावाटी** वाले

संपर्क -
ताऊ शेखावाटी
द्वारिकाकुंज, ३२, जवाहर नगर,
सवाई माधोपुर (राज.)
मो. ०९४१४२ ७०३३६

स्थापना दिवस समारोह

बंगाल में बसनेवाले मारवाड़ी बंगाल के हो गये है : सुदीप बन्दोपाध्याय

समाज सुधार में सम्मेलन का योगदान सराहनीय : सौगत राय

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के ७७वें स्थापना दिवस समारोह का उद्घाटन केंद्रीय राज्य स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री सुदीप बंद्योपाध्याय ने दीप प्रज्ज्वलित कर दिया। अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा कि बंगाल में बसने वाले मारवाड़ी बंगाल के हो गए हैं। उन्होंने कहा कि ईश्वर ने मारवाड़ियों को धन, बुद्धि, व प्रतिष्ठा दी है और वे इसका सदुपयोग भी कर रहे हैं। उन्होंने जागृत समाज से बंगाल के विकास में सहयोग करने एवं गंगा को प्रदूषण मुक्त कराने में सहभागित निभाने का आह्वान किया।

स्थानीय विद्यामंदिर सभागार में आयोजित स्थापना दिवस समारोह में श्री गणेश जी एवं सम्मेलन के संस्थापक स्वर्गीय रायबहादुर रामदेव चोखानी की तस्वीर पर माल्यार्पण के पश्चात् अपने स्वागत भाषण में सम्मेलन सभापति श्री हरि प्रसाद कानोड़िया ने सम्मेलन के आदर्श वाक्य "म्हारो लक्ष्य राष्ट्र री प्रगति" का उद्घोष करते हुए कहा कि हमें अपने पूर्वजों द्वारा प्रदत्त संस्कारों को संचित करते हुए आगे बढ़ना

बाये से दाये – पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विजय गुजरवासिया, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया, राष्ट्रीय महामंत्री श्री सन्तोष सराफ, केन्द्रीय राज्यमंत्री श्री सुदीप बन्दोपाध्याय एवं श्री सौगत राय तथा सम्मेलन के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया, पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा एवं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री राम अवतार पोद्दार।

सभा को सम्बोधित करते केन्द्रीय राज्य स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री सुदीप बन्दोपाध्याय।

सभा को सम्बोधित करते केन्द्रीय राज्य शहरी विकास मंत्री श्री सौगत राय।

स्थापना दिवस पर अपने उद्‌गार व्यक्त करते सम्मेलन सभापति श्री हरिप्रसाद कानोड़िया।

है। समाज सुधार के जो भी कार्यक्रम है वो युवा एवं मातृशक्ति के सहयोग से ही संभव है। लेकिन इसके लिए बुजुर्गो के अनुभवशाली परामर्श की भी आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि समाज के मनीषियों ने जिस लक्ष्य को सामने रखकर सम्मेलन की स्थापना की थी उसे प्राप्त करने के लिए सम्मेलन की मजबूती सबसे जरूरी है। समर्थ संगठन से ही समर्थ समाज का निर्माण होता है।

राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष सराफ ने सचिव का प्रतिवेदन पढ़ा एवं सम्मेलन द्वारा किये जा रहे कार्यो की जानकारी दी।

पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने कहा कि समाज को स्वयं में ताकत पैदा करनी होगी। किंतु हम सिर्फ धन के बल पर ही सबल नहीं हो सकते बल्कि हमें राजनैतिक स्तर पर भी सक्रिय होना होगा और तभी हम विपरीत परिस्थितियों का सामना भी सक्षमता से कर सकेंगे। श्री शर्मा ने कहा कि मारवाड़ी सम्मेलन एकमात्र ऐसी संस्था है जो अपनी खामियों की चर्चा कर उसे दूर करने का प्रयास करती है। स्वयं में सुधार लाने के लिए चिंतन मनन करता है। उच्च शिक्षा कोष के संबंध में उन्होंने बताया कि समाज के मेधावी छात्र-छात्रा जो धन के अभाव में उच्च शिक्षा से वंचित रह जाते हैं, वैसे छात्रों को इस कोष से आर्थिक सहयोग दिया जाता है।

मुख्य अतिथि के रूप में अपने

स्थापना दिवस समारोह पर अपने विचार व्यक्त करते सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा।

सीताराम रुंगटा राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार से सम्मानित साहित्यकार डॉ. उदयवीर शर्मा अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए।

उच्च शिक्षा हेतु सुश्री पायल गांगुली को सहायता राशि का चेक प्रदान करते उच्च शिक्षा कमेटी के चेयरमैन श्री प्रह्लाद राय अग्रवाल, साथ में है केन्द्रीय राज्य मंत्री श्री सौगत राय, श्री सुदीप बन्दोपाध्याय व अन्य।

विचार व्यक्त करते हुए केंद्रीय राज्य शहरी विकास मंत्री श्री सौगत राय ने कहा कि सम्मेलन अपने स्थापना काल से ही दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा, लड़कियों की शिक्षा, विधवा विवाह आदि अनेकानेक सामाजिक बुराईयों को रोकने के लिए कृत संकल्पित है। लड़कियों की उच्च शिक्षा के लिए सम्मेलन सराहनीय कार्य कर रहा है। इसके लिए वे साधुवाद के पात्र हैं।

समारोह में मूर्धन्य साहित्यकार डॉ. उदयवीर शर्मा को सीताराम रुंगटा राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके तहत डॉ. शर्मा को शॉल, पाग, श्रीफल एवं मानपत्र के साथ २१ हजार रुपयों का एक चेक सम्मेलन के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया एवं पश्चिम बंग प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विजय गुजरवासिया ने भेंट किया। इसके अतिरिक्त उच्च शिक्षा हेतु सुश्री पायल गांगुली को उच्च शिक्षा कमेटी के चेयरमैन श्री प्रहलाद राय अग्रवाल ने सहायता राशि का एक चेक प्रदान किया। धन्यवाद ज्ञापन करते हुए राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार ने कहा कि समाज के समक्ष आज अनेकों चुनौतियां है जिसका हमें मिलकर सामना करना होगा। संचालन किया संयुक्त महामंत्री श्री संजय हरलालका ने। अंत में श्री विनोद वर्मा के नेतृत्व में एक भक्तिमय नाटक "मीरा की अमर कहानी" का मंचन हुआ।•

सचिव का प्रतिवेदन

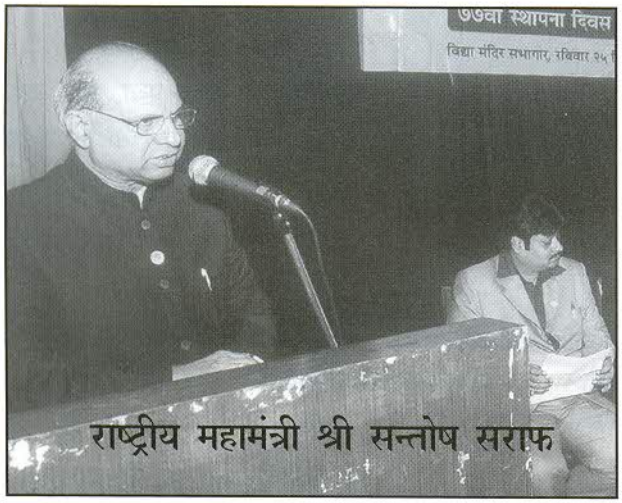

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के ७७ वें स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर आप सभी का हार्दिक स्वागत। २५ दिसम्बर १९३५ में समाज के मनीषियों ने प्रवासी मारवाड़ी समाज को आपस में जोड़ने, समाज से कुरीतियों को हटाने, समाज सुधार, राष्ट्र सेवा आदि के लिए अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना की थी। अपने स्थापना काल से ही सम्मेलन पर्दा-प्रथा, बाल-विवाह, दहेज प्रथा, बालिका शिक्षा जैसी सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ आंदोलन छेड़ता रहा है। सम्मेलन की गतिविधियाँ मात्र यहीं तक सीमित नहीं वरन् आग से बेघर परिवार, ठंड़ से ठिठुरते व्यक्ति, भूकम्प, अकाल, सुनामी तथा अन्य प्राकृतिक विपदाओं के समय सम्मेलन ने लोगों की सेवा की है।

७७ वर्ष की अपनी अविराम यात्रा में सम्मेलन ने सामाजिक चेतना, संगठन, समरसता, साहित्य और संस्कृति, शिक्षा के प्रचार-प्रसार, सेवा कार्य के क्षेत्र में महती भूमिका निभायी है। महानगर से लेकर दूर-दराज के ग्राम तक जब कभी भी समाज पर आपत्ति-विपत्ति आयी है, सम्मेलन ने सदैव सहायता का हाथ बढ़ाया है। समाज और राष्ट्र का सर्वांगीण विकास इस संस्था का मुख्य लक्ष्य है।

महात्मा गाँधीजी के विदेशी वस्त्र जलाओ आंदोलन, करो या मरो आन्दोलन आदि में सम्मेलन के सभी पदाधिकारी सक्रिय थे, जिसमें कइयों को जेल की सजा भी काटनी पड़ी थी।

मजबूत संगठन के बिना कुछ भी संभव नहीं है। हमें अपनी जड़ों को मजबूत करने हेतु नगर, जिला, प्रांतीय शाखाओं को और संगठित, शक्तिशाली करना है। इस समय सम्मेलन की कुल १४ प्रांतों में शाखाएँ हैं।

राजस्थानी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए प्रत्येक वर्ष स्थापना दिवस के अवसर पर सीताराम रुँगटा राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार राजस्थानी भाषा के किसी लेखक को साहित्यिक अवदान के लिए प्रदान किया जाता है।

कोलकाता के अमहर्स्ट स्ट्रीट स्थित सम्मेलन भवन का निर्माण कार्य जल्द ही शुरू किया जायेगा। म्यूटेशन का काम पूरा किया जा चुका है।

उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे समाज के मेधावी छात्रों को आर्थिक अनुदान देने के लिए उच्च शिक्षा कोष विगत वर्ष में गठित की जा चुकी है। इस कोष के लिए लगभग २ करोड़ की राशि का संग्रह किया जा चुका है, ५ करोड़ की राशि संग्रह करने का लक्ष्य रखा गया है।

हमें यह कहते हुए अत्यंत ही दुःख हो रहा है कि सम्मेलन के दो स्तम्भ पुरुष श्री नन्दकिशोर जालान और श्री हनुमान प्रसाद सरावगी का निधन इस वर्ष हो गया। दोनों व्यक्ति के निधन से जो रिक्त स्थान पैदा हुआ है उसे भर पाना संभव नहीं। ●

विनोद वर्मा निर्देशित भक्ति नाटक मीरा की अमर कहानी के दृश्य

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

समाज सुधार कमेटी की बैठक में

विवाह समारोहों में मद्यपान रोकने का आह्वान

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की समाज सुधार कमेटी की बैठक ११ जनवरी २०१२ को ७, अलीपुर एवेन्यू में सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता कमेटी के अध्यक्ष डॉ. जुगल किशोर सराफ ने की।

अपने वक्तव्य में डॉ. सराफ ने कहा कि शादी में शरीक होने के लिए महंगे आमंत्रण कार्ड भेजने का सिलसिला शुरू हो चुका है। सादगीपूर्ण तरीके से विवाह समारोह आयोजित करने का आग्रह समाज से किस तरह किया जाए, इस पर विचार करना जरूरी है। समाज में विवाह समारोह के दौरान मद्यपान करने की जो परिपाटी चली है, वह दुःखद है। इस तरह की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने के लिए सम्मेलन एक अपील पत्र जारी करने पर विचार करे।

सम्मेलन सभापति श्री हरि प्रसाद कानोड़िया ने कहा कि अपने रिश्तेदारों द्वारा शादी के दौरान जो बेवजह खर्च की जाती है उसे रोकने में दुविधाजनक स्थिति आ जाती है। अपने परिवार, कुटुम्ब में हो रही खर्चीली शादी किस तरह रूके इस पर भी सदस्यगण विचार करें। आगामी दिनों में महिला सम्मेलन, युवा सम्मेलन तथा केन्द्रीय सम्मेलन को लेकर फिजुलखर्ची, मद्यपान आदि पर प्रतिबन्ध किस तरह लगाया जाए, इस विषय पर एक संयुक्त बैठक बुलाने की योजना है।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथालिया ने सुझाव देते हुए कहा कि महंगे कार्ड बनवाना महज भौंडापन है।

श्री ओम लडिया ने कहा कि महंगे कार्ड नहीं बनवाने की आलोचना से समाज पर कोई असर नहीं पड़ेगा। फिजुलखर्ची रोकने में महिला शक्ति के योगदान की आवश्यकता है। धार्मिक आयोजनों में जिस तरह बेवजह खर्च हो रहे हैं उसे रुकवाने पर भी विचार किया जाए।

श्री मदनलाल बामलवा ने कहा कि व्यक्ति का चरित्र रुपये की आमदनी के साथ बदलता है। महंगे कार्ड छपवाने के पीछे जो मंशा छिपी है उसे भी देखना चाहिए। समाज से यह अपील की जा सकती है कि शादी में अपनी क्षमता और जरूरत के हिसाब से खर्च करें।

श्री प्रह्लाद राय गोयनका ने सुझाव देते हुए कहा कि आज का युग तर्क प्रधान है। हमलोग दर्शन करें न कि प्रदर्शन। उन्होंने तीन प्रस्ताव रखते हुए कहा कि इन पर विचार करने की जरूरत है। मद्यपान रोकने, सामूहिक विवाह को प्रोत्साहन एवं दर्शन को प्रत्साहित करें न कि प्रदर्शन को।

पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने सभी सदस्यों के प्रस्तावों को सुनने के बाद कहा कि समाज सुधार सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य है। लगभग सभी बैठकों में इस विषय पर गंभीर चर्चा होती है। अनवरत प्रयास के बाद समाज सुधार विषयक बहुत सारे काम हो चुके हैं, जो काम नहीं हुए वह कैसे हो इस पर मंथन करने की जरूरत है। समाज के उच्च वर्ग जो माणदण्ड स्थापित करेंगे, उसका अनुकरण नीचे की श्रेणी भी करेंगी। उच्च वर्ग सादगी पूर्वक विवाह समारोह करेंगे तो नीचे की श्रेणी भी वैसा कर सकती हैं। अतः समाज सुधार की प्रक्रिया समाज के ऊपरी वर्ग से शुरु हो, निचला वर्ग उसका अनुकरण करेगा। श्री शर्मा ने कहा कि शादी समारोहों में फिजुलखर्ची, दिखावा, प्रदर्शन, मद्यपान सोचनीय बात है। विवाह में जो मद्यपान की परिपाटी चली है उसे रोकने के कोई भी मान्य निर्णय हमलोग लें। मद्यपान रोकने का एक कारगर तरीका ये हो सकता है कि किसी विद्वान आचार्य से धर्म तथा मद्यपान पर लेख लिखवाकर उसे समाज हित में प्रचारित किया जाए, क्योंकि धर्म का प्रत्यक्ष प्रभाव समाज पर है। समाज अभी भी धर्म से जुदा नहीं हुआ है। इस प्रचार के बाद भी जिनके यहाँ शादी समारोह के अवसर पर कॉकटेल पार्टी होती है उनके यहाँ विवाह समारोह में हमलोग भाग नहीं लें।

राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष सराफ ने कॉकटेल पार्टी पर गोष्ठी करवाने का सुझाव रखा।•

संयुक्त मंत्री कैलाश तोदी को पितृशोक

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के संयुक्त मंत्री श्री कैलाशपति तोदी के पिता श्री श्याम सुन्दर तोदी को स्वर्गवास गत २१ दिसम्बर २०११ को हावड़ा में हो गया। सम्मेलन उनके निधन पर हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

IISD

A Gateway to Careers

SREI Foundation

"Educate Morally & Technically"
— Swami Vivekananda

Swami Vivekananda Merit Scholarship upto 100%

Quality Higher Education at lowest prices
– a corporate social responsibility

3 Yrs. **BBA** ₹ 75,000	2 Yrs. **MBA+ PGPM** ₹ 85,000
3 Yrs. **BCA** ₹ 75,000	2 Yrs. **MBA (Hospital Admin.)** ₹ 95,000

ELIGIBILITY & SELECTION

FOR MBA

- BACHELOR'S DEGREE IN ANY DISCIPLINE
- APPEARING FOR FINAL DEGREE EXAMINATION
- GROUP DISCUSSION
- PERSONAL INTERVIEW
- ★ APPLICANTS WITH CAT / MAT / XAT ARE PREFERRED

FOR BBA & BCA

- 10 + 2 PASSED FROM ANY HIGHER SECONDARY BOARD/COUNCIL

Assistance for placement

Eminent Faculty
Regular / Weekend Classes
AC Classrooms/Hostel

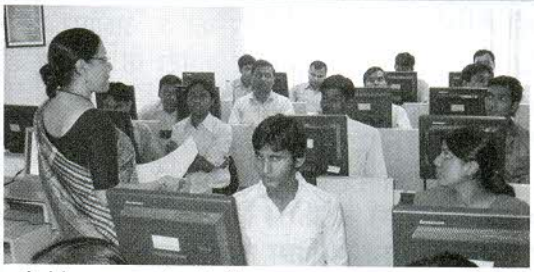

Achieve your Aspiration ...
... be a **Corporate Leader !**

Complimentary Courses with MBA, BBA, BCA :

- Spoken English • Foreign Languages
- Soft Skills Training from HCL - CDC
- ERP Training (Microsoft Certified)
- Company Secretaryship / Chartered Accountancy / Administrative Services
- Entrepreneurship Development

Other Courses :

- Company Secretaryship • Advocateship
- E-Tuition
- Montessori Teacher Training (1 Year Diploma)
- **Language Courses : Functional English, Spoken English, Spanish, Italian, Russian, German, Chinese, Japanese, Arabic, Burmese, Persian, French, Korean, Sanskrit and Hindi**
- **NDA / CDS – UPSC Examinations and SSB Interview**
- **Certificate Course in Computer Applications**
- **Advanced Diploma in Financial Management**
- **Entrepreneurship Development**
- **Vocational & Technical Training**
- **Indian Administrative Service (IAS) and Allied Services Examinations (Prelim and Main)**
- **WBCS (Executive) and Judicial Services Examination (Prelim and Main)**
- **Chartered Accountancy (CPT, IPCC & Final)**
- **Diploma in Banking and Finance**
- **Preparatory course for Entrance Examination of MD, MS, MRCP (Medicine) – Part-I and DNB – Part-I**

Recognised by UGC, Ministry of HRD, Govt. of India, Approved by Joint Committee of UGC, AICTE & DEC

INSTITUTE FOR INSPIRATION & SELF DEVELOPMENT

Unit - I

IB-200/1, Sector-III, Salt Lake, Kolkata - 700 106
Ph : 2335 2378/2861, Fax : 2335 2379
E-Mail : info@iisdedu.in
Website : www.iisdedu.in

Unit - II

9, Syed Amir Ali Avenue, 5th Floor
Kolkata- 700017, Ph : 4001 9894
E-Mail : iisdunit2@gmail.com
Website : www.iisdedu.in

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन एवं महिला सम्मेलन का संयुक्त आह्वान

मिलकर करेंगे समाज सुधारक काम

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन एवं मारवाड़ी महिला सम्मेलन की बीतें माह की २८ तारीख के हुई एक संयुक्त बैठक में यह स्वीकार किया गया कि सम्मेलन के उद्देश्यों की पूर्ति एवं समाजहित में अब एकजूट होकर कार्य करने की आवश्यकता है। बैठक में तय हुआ कि दोनों संगठन राष्ट्रीय, प्रांतीय तथा स्थानीय स्तरों पर विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से आपसी तालमेल बनाकर एकसाथ सेवामूलक कार्य करें। यह भी तय हुआ कि दोनों संगठन अपने स्वतंत्र रूप में एक दूसरे के पूरक बन कार्य करेंगे।

बैठक में सम्मेलन के अध्यक्ष श्री हरि प्रसाद कानोड़िया, पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री राम अवतार पोद्दार, महामंत्री श्री संतोष सराफ, संयुक्त मंत्री श्री संजय हरलालका, महिला सम्मेलन की अध्यक्षा स्मिता चेनानी, उपाध्यक्ष शारदा लाखोटिया, सहसचिव राज कुमारी सबाल्दी, प्रांतीय अध्यक्ष श्वेता टिबड़ेवाल, प्रांतीय सचिव मंजू डोकानिया, श्रीमती विमला डोकानिया आदि कई सदस्य मौजूद थे।

दोनों संगठनों ने उक्त निर्णयों को सुचारु रूप से रूपायित करने हेतु संयुक्त रूप से यह निर्णय लिया कि दोनों संस्थाएं राष्ट्रीय एवं प्रांतीय स्तर पर चार-चार समन्वयकर्ताओं को आपसी तालमेल स्थापित करने हेतु मनोनीत करेंगी। अंत में आशा व्यक्त की गयी कि इस ऐतिहासिक पहल के तहत एकजूट होकर मारवाड़ी सम्मेलन के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कुछ महत्वपूर्ण एवं कारगर भूमिका निभायी जा सकेगा।

राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति के स्वर्ण जयन्ती वर्ष के अन्तर्गत आयोजित कार्यक्रमों के समापन अवसर पर गिरीश पंकज ने कहा कि छंद हमारे मस्तिष्क एवं स्मृति में सुरक्षित हो जाते है। उत्तर आधुनिकता के नाम पर लोगों के कपड़े उतारने की प्रवृति पर कटाक्ष करते हुए कहा कि नारी विमर्श सिर्फ नारी देह दर्शन तक सिमट गया है और नारी का व्यक्तित्व गौण हो गया है जो भयावय स्थिति है। इस समारोह में हिन्दी परामर्श मण्डल सदस्य योगेन्द्रनाथ शर्मा 'अरूण' ने कहा कि संचार क्रांति और तकनीक हिन्दी को उतरोत्तर आगे ले जाने का कार्य कर रही है। वैश्विक आर्थिक उदारीकरण के दौर में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को अपने उत्पादों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए जिस माध्यम की सर्वाधिक जरूरत है वह भाषा है और हिन्दी का जन भाषा होना ही उसकी जीवन्तता है। जिसके कारण आधुनिक संचार माध्यमों में हिन्दी का उपयोग अनिवार्य बन चुका है। उन्होंने कहा कि जापान जैसे विकसित राष्ट्र के विश्वविद्यालय में हिन्दी अध्ययन का शताब्दी वर्ष मनाना हिन्दी के लिए गौरव की बात है। स्वागत उदबोधन करते हुए साहित्य अकादेमी के उपसचिव बृजेन्द्र त्रिपाठी ने कहा कि अकादेमी ने सभी भारतीय भाषाओं को एक सांझा मंच उपलब्ध करवाया है तथा हिन्दी को योजक के रूप में व्यवहृत कर अनुवाद के क्षेत्र में योगदान दिया है। अकादेमी अब महानगरों से निकलकर कस्बों में भी हिन्दी सेवा एवं प्रचार प्रसार करने वाली संस्थाओं के कार्यक्रमों में अपनी हिस्सेदारी बढ़ा रही है। जो साहित्य जगत में अभिवृद्धि का द्योतक है। सत्र की अध्यक्षता करते हुए राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी के अध्यश्र श्याम महर्षि ने कहा कि साहित्य कभी अप्रासंगिक नहीं होता। जब आदमी को आदमी समझने की भावना हमारे मन में रहेगी, तब साहित्य की सदैव आवश्यकता रहेगी। महर्षि ने कहा कि कविता ही हैं जो सत्ता को भयभीत करती है और स्वतंत्रता का रास्ता दिखाती है। उदघाटन सत्र में बृजेन्द्र उदभ्रांत, योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरूण' एवं गिरीश पंकज को संस्था की ओर से 'साहित्य मार्तण्ड' उपाधि से अलंकृत किया गया। धन्यवाद ज्ञापन समिति के संयुक्त मंत्री रवि पुरोहित ने किया।

ओंकारमल अग्रवाल पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष निर्वाचित

हाल ही में आयोजित प्रादेशिक सभा की बैठक में श्री ओंकरमल अग्रवाल सर्वसम्मति से पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष निर्वाचित किये गये। उन्होने वर्त्तमान अध्यक्ष डॉ. श्याम सुन्दर हरलालका से भार ग्रहण किया।

श्री ओंकरमल अग्रवाल इससे पूर्व राष्ट्रीय सम्मेलन के उपाध्यक्ष एवं प्रादेशिक सम्मेलन के अध्यक्ष रहे है। पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन शीघ्र ही प्रादेशिक अधिवेशन के आयोजन बाये हाथ में ले रही है।

Enlightenment

a Journey within - through service ...

WORLD CONFLUENCE OF HUMANITY, POWER & SPIRITUALITY

A milestone Confluence will be organized from
January 2nd to 4th, 2012 from 11 AM to 7 PM
at Eastern Zonal Cultural Centre, Saltlake, Kolkata.

MISSION

- A world with happiness, peace, harmony, austerity, simplicity, prosperity & good health for all.
- Trinity of Power (money, authority, muscles) to be imbibed with humanity & spirituality.
- Economic growth to be with human facet.
- Awakening women power - reflecting Gods love.

VISION

- To live and let live in peace, harmony, love following the path of righteousness protecting Mother Earth.
- Faith in own religion while respecting other religions.
- Awakening the inner power & ignite human power.

Essay COMPETITION
FOR STUDENTS

TOPIC - "ESSENTIALISM OF SPIRITUALITY TO BLOSSOM LIFE & THE NATION"

(Maximum of 500 words)

Group A : Classes 9 - 12	Group B : Undergraduates
1st PRIZE - Platinum ₹ 30,000	2nd PRIZE - Diamond ₹20,000
3rd PRIZE - Gold ₹15,000	4th PRIZE - Silver ₹10,000
5th PRIZE - Bronze ₹2,500	6th PRIZE - Consolation ₹500

The Winners will also be invited with their parents to read their essay in the World Confluence, 2012 in front of the distinguished gathering

For further details, please contact:
Harsh Kanoria | +91 90070 30766

SREI FOUNDATION

Institute for Inspiration & Self Development

be Business Economics

Sree Ganesh Centre, 216, A. J. C. Bose Road, Kolkata - 700 017
M : +91 90070 10047 T : +91 (33) 2283 0362 F : +91 (33) 2290 0280 E : enlightenment.be@gmail.com
URL : www.enlightenmentbe.org / www.businesseconomics.in / www.iisdedu.in

Parents, friends & relatives of other then winners can participate. Please request for Invitation.

पश्चिम बंग मारवाड़ी सम्मेलन ने करवायी कन्या की शादी

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन ने वर-वधू की शादी योजना में सहयोग का शुभारंभ किया। सम्मेलन के नये कार्यालय के उद्घाटन समारोह में अध्यक्ष विजय गुजरवासिया ने युवक-युवतियों की शादी में आर्थिक सहयोग देने की घोषणा की थी। इसी कड़ी में सीकर भवन में आयोजित समारोह में बांकड़ा (हावड़ा) मुंशी मोड़ निवासी अशोक शर्मा की सुपुत्री पूजा शर्मा की गोपाल पुजारी के सुपुत्र दिनेश पुजारी से शादी सम्पन्न हुई। कन्यादान श्री गुजरवासिया व श्रीमती सरला गुजरवासिया ने किया। सम्मेलन के पदाधिकारी रामगोपाल बागला, घनश्याम प्रसाद सोभासरिया, विश्वनाथ सिंघानिया, किशनलाल बजाज, रामनिवास शर्मा, दामोदर प्रसाद विदावतका ने वर-वधु को आर्शिवाद दिया।

मोडिया लिपि पर कार्य

राजस्थानी भाषा व उसकी समृद्धि हेतु कोलकाता के श्री शंभु चौधरी "मोडिया लिपि" पर कार्य कर रहे हैं। इस संदर्भ में आपके पास यदि कोई पुरानी जानकारी व दस्तावेज (बहीखाता, पत्राचार या जमीन का पट्टा आदि) की फोटो, फोटो कॉपी, मूल दस्तावेज आप उनके पते पर या सम्मेलन के कार्यालय में भेज सकते हैं।

शम्भु चौधरी
एफ.डी.-४५३/२ साल्टलेक सिटी, कोलकाता-१०६

सुकुमार रायचौधरी को विवेकानन्द सेवा सम्मान

श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा प्रवर्तित २६वां विवेकानन्द सेवा सम्मान कर्मवीर योद्धा तथा बोड़ाइल उपजाति कल्याण आश्रम, बुनियादपुर (पश्चिम बंगाल) के संस्थापक संचालक श्री सुकुमार रायचौधरी को लगभग ४ दशकों से उस अंचल के वनवासी एवं पिछड़े लोगों की शिक्षा, चिकित्सा एवं स्वधर्म गौरव जागरण हेतु आगामी रविवार, १२ फरवरी २०१२ को प्रातः १०.३० बजे स्थानीय महाजाति सदन एनेक्सी हॉल में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय बौद्धिक प्रमुख श्री वी. भाग्गया के हाथों समर्पित किया जायेगा। सम्मान स्वरूप ५१,०००/- की नकद राशि एवं मानपत्र भेंट किया जायेगा।

कवि अम्बू शर्मा लिखित राजस्थानी रामायण के छह छंद

रस्तो वो अर राम वो, बाही भिड़म यार।
पण जद जय जयकार थी, इब है तौबाधार।।

जोड्या रघुवर पावना तोड्या नैन समाज।
छोड्या सातुँ बारणाँ दौड्या खुद महराज।।

कटक लेयकर जायस्यूँ अटक लेय स्यू राम।
झटक लेयस्यू झिंकिया, पटक लेय स्यूँ प्राण।।

सीता बादल बांजली, रावण स्याह मुराड़।
अगन घड़ा ज्यूँ निकली रावण दील पहाड़।।

खलबल तो मन थाम ले हलबल सता नार।
घड़मल मत आँसू ढ़ले, मलमल दील मल्हार।।

नयना रोयी घोल ली मुखपर तांबो लेप।
वारी जाहूँ लालजी, इसी ढ़ाल दिय चेप।।

Anant Education Initiative | Anant footprints of knowledge

a CSR initiative of INFINITY

Anant Education Initiative

Anant merit scholarship is for deserving, aspiring meritorious students from the economically weaker sections of the society.

Anant merit scholarship reaches out to meritorious students, who have secured **70%** and above in their Board exams.

50% of the total number of scholarships awarded every year are **reserved for girl students. Physically challenged students** are given preference.

Infinity Business Centre, 18th floor, Infinity Benchmark, Block EP & GP, Plot G1, Sec V, Salt Lake, Kolkata - 91
For donation contact : **91-33-40050410-417** | **info@ananteducation.org** | **www.ananteducation.org**
* Donations are eligible for deduction under section 80G(5)(vi) of Income Tax Act

परिवार में संस्कार का महत्व

– संजय सुरेका

प्राचीन काल से ही भारत में सदाचार को जीवन के मूल गुणों में माना गया है। हमारे पारिवारिक जीवन में संस्कार और नैतिकता को बहुत महत्व दिया गया है। हमारी मान्यता है कि परिवार के संस्कार से ही पशु जैसा शिशु भी महामानव और देवमानव बन जाता है। घर मानव, महामानव और देवमानव बनाने का केन्द्र है। घर मंदिर के समान है। समाज में जो कुछ होना चाहिए वह सब घर में भी होना चाहिए। दुनिया के अन्य देशों में सुविधा साधन और समृद्धि बहुत है, लेकिन वहां सुख नहीं है। वहां का कानून ऐसा है कि १४ साल का बच्चा भी अपने पिता पर मुकदमा दायर कर देता है। जो ऐसा करेगा उसे जागरूक मानते हैं। लेकिन अपने देश में ऐसा नहीं मानते हैं। कई देशों में ऐसा चलन है कि माता-पिता वृद्ध हो गए हैं, उन्हें वृद्धाश्रम भेज दो। वहां वृद्धाश्रम मान्य परंपरा है। हमारे यहाँ हालांकि कुछ लोग आधुनिकता की दुहाई देकर पश्चिम की इस गलत परिपाटी को अपना रहे हैं मगर अधिकांश लोग लोकलाज के डर से ऐसे कदम उठाने से डरते हैं।

घर, समाज और पाठशाला ऐसे तीन स्थान हैं जहां पर त्याग और बलिदान का संस्कार मिलता है। हमारे परिवार में एकाकीवाद नहीं, अंगांगीभाव है। परिवार के सभी सदस्य अपने कर्तव्य का पालन धर्म की तरह करते हैं। भले ही आधुनिकता के प्रभाव से कुछ शिथिलता आई है मगर आज भी बहुत से परिवारों में संस्कारों की मर्यादा देखने को मिलती है।

मैं यह मानता हूँ कि अगर हम अपने आचरण में थोड़ा सुधार लाएँ तो अभी भी हमारा सामाजिक और पारिवारिक जीवन सुखमय हो सकता है।

परिवार में एक-दूसरे के साथ रहने में थोड़ा-सा प्रेमभरा समझौता यदि किया जाए तो आनंद और सुगंध दोनों मिल जाते हैं। बगीचे में हर फूल अपनी महक लिए होता है। उसी प्रकार जब हम परिवार में रहते हैं तो हर सदस्य की अपनी एक सुगंध होती है। जो सुगंध आपको अच्छी लगत है, उस व्यक्ति के पास हम रहना पसंद करते हैं।

परिवार में सहयोग, समझौता और सूझबूझ रिश्तों के मतलब ही बदल देते हैं। एक कुटुंब में न तो केवल पुरुषों से जीवन आएगा और न केवल स्त्रियों से। घर की माता, बहन, पत्नी, पुत्री, बहू, भाभी के रूप में हर औरत एक विशेष सुगंध लिए रहती है। जैसे ही यह किसी पवित्र रिश्ते से जुड़ती है, पूरा जीवन महक उठता है।

इसे पवित्र रखने के लिए हर घर में भक्ति का आचरण बड़ा काम आएगा। जैसे ही परिवार में भक्ति उतरती है, सबसे समानता का व्यवहार होने लगता है। घर में व्यक्तिवादी दृष्टिकोण होना जरुरी है। इसका अर्थ है कि घर के हर व्यक्ति का समान विकास हो। हर एक की स्वतंत्रता मान्य की जाए और उसके निजी व सामाजिक विकास में पूरा परिवार सहयोग करे। परिवार की सामूहिक भक्ति-भावना इस जीवनशैली को प्रेरित व प्रोत्साहित करती है।

सम्बन्धों के अधपतन से बचने के लिये मेरे अनुसार निम्न कार्य किये जाने चाहियें :

१. **अपनी कम, मध्यम और लम्बे समय की पैसे की जरूरतों का यथार्थपरक आकलन कीजिये :**
इस आकलन को समय समय पर पुनरावलोकन से अपडेट करते रहना चाहिये। इस आकलन के आधार पर पैसे की जरूरत और उसकी उपलब्धता का कैश फ्लो स्पष्ट समझ लेना चाहिये। अगर उपलब्धता में कमी नजर आये तो आय के साधन बढ़ाने तथा आवश्यकतायें कम करने की पुख्ता योजना बनानी और लागू करनी चाहिये। जीवन में सबसे अधिक तनाव पैसे के कुप्रबन्धन से उपजते हैं।

२. **मितव्ययिता न केवल बात करने के लिये अच्छा विषय है वरन उसका पालन सही तरीके से होना चहिये :**
हमारी आवश्यकतायें जितनी कम हॉगी, हमारे तनाव और हमारे खर्च उतने ही कम होंगे। आज लोगों में मितव्ययिता की मानसिकता कम हो गयी है। वे बिना जरूरत के बहुत सी चीज़ें खरीदते रहते हैं। इससे एक समय उनके समक्ष आर्थिक असंतुलन का खतरा आ जाता है।

३. **अपने बुजुर्गों का पूरा आदर - सम्मान करें :**
घर के बड़े-बुज़ुर्गों के लिए चाहे जैसा भी त्याग करना पड़े, कीजिये। अपनी मुश्किलों को समायोजित करने का यत्न करें। आपके त्याग में आपको जो

कष्ट होगा, भगवान आपको अपनी अनुकम्पा से उसकी पूरी या कहीं अधिक भरपाई करेंगे।

४. **किसी भी प्रकार के नशे से दूर रहें :**
पारिवारिक जीवन में बहुत से क्लेश किसी न किसी सदस्य की नशाखोरी की आदत से उपजते हैं। यह नशाखोरी विवेक का नाश करती है। आपकी सही निर्णय लेने की क्षमता समाप्त करती है। आपको पतन के गर्त में उतारती चली जाती है और आपको आभास भी नहीं होता।

भारत की संस्कृति को तीन शब्दों में व्यक्त करना है तो कह सकते हैं कि हमारी संस्कृति है अर्पण, तर्पण और समर्पण। तीनों में त्याग है और यह त्याग कर्तव्य रूपी है, उपकार रूपी नहीं। अर्थात त्याग करके हम किसी पर उपकार नहीं करते। समाज के लिए किया गया त्याग अर्पण, पितरों व माता-पिता के लिय किया गया त्याग तर्पण और भगवान के लिए किया गया त्याग समर्पण कहलाता है। इनमें ज्यादा महत्वपूर्ण परिवार और समाज के लिए किया जाने वाला त्याग है, क्योंकि वह हमारा कर्तव्य है। •

समाज की दिशा और दशा

– **मोजीराम जैन**
पूर्व उपाध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

मारवाड़ी समाज देश के अग्रणी समाजों में एक है। हमारा समाज निरंतर प्रगति के सोपान चढ़ता जा रहा है। समाज में एक सकारात्मक बदलाव नजर आ रहा है। यह एक अच्छी बात है की मारवाड़ी सम्मेलन के अन्तर्गत शिक्षा प्रोत्साहन परियोजना के तहत समाज के युवक-युवतियों को उच्च शिक्षा के लिए सहयोग प्रदान किया जा रहा है। इस व्यवस्था को सही ढंग से चालू रखा जाए तो परिणाम दूरदर्शी हो सकते हैं। इससे युवा वर्ग को प्रशासनिक, अर्थनैतिक, राजनैतिक क्षेत्र में बढ़ने का अवसर प्राप्त होगा। आज हमारे समाज के युवकों का इस दिशा में रूचि बढ़ रही है और वे सफल भी हो रहे है।

समाज में कन्या भ्रूणहत्या के विरोध में आवाज मुखरित हो रही है। समाज में लड़कियों का अनुपात निरंतर घटता जा रहा है। आज बहुत सारे लड़के शादी की उम्र पार करके भी कुँवारे है। यही लड़के जब समाज मे प्रदूषण फैलाएंगे, तब हमारी संस्कृति और सभ्यता के ऊपर प्रहार होगा। अतः चिंतन करने योग्य बात है कि कन्या भ्रूणों को कैसे सुरक्षित रखा जाए? कन्या भ्रूणहत्या को जड़ से मिटाने के लिए समाज मे लड़कियों को उचित सम्मान देना पड़ेगा एवं उनकी अस्मिता सुरक्षित रखनी पड़ेगी। आज हमारे समाज कि ललनाएँ अनेक क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा प्रदर्शित कर रही हैं। आवश्यक है उन्हें उचित अवसर और प्रोत्साहन देने की, जिसमें हम पिछड़ जातें। उनका मार्गदर्शन कर के उन्हें खुले आकाश में श्वास लेने दें तो वे अपनी क्षमता के अनुसार प्रदर्शन कर सकती हैं।

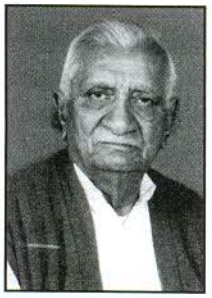

शिक्षा परियोजना की तरह मारवाड़ी सम्मेलन का एक दायित्व और है समाज के भाईयों के प्रति। जीवनधारण की पाँच बुनियादी आवश्यकता रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा और चिकित्सा समाज के हर भाई को उपलब्ध हो, यही ध्यान रखना है। समाज के धनी वर्ग को प्रेरित कर के एक ऐसा फंड़ का निर्माण किया जाए, जिससे जरूरतमंद भाईयों की सहायता की जा सके। इसे क्रियान्वित और संचालित करने की जिम्मेदारी सम्मेलन की होनी चाहिए। धनिक वर्ग को भी यह सोचना पड़ेगा की उनके पार्श्व मे समाज के भाई दीन-हीन जीवन जी रहे हैं और वे व्यर्थ के प्रदर्शनों में पानी की तरह पैसा बहा रहे हैं। वे इतने स्वार्थी बन गयें हैं कि उन्हें पराया दर्द का अहसास ही नहीं हो रहा है। समाज में यह आर्थिक विषमता हिंसा की सृष्टि कर सकता है। समाज में समानता लाने के लिए हर कोई आत्मनिर्भर बनें, इस दिशा में कार्य करना पड़ेगा, तभी सही मायने में हम विकसित समाज कहलाएंगे और यह राष्ट्र के विकास में सहायक साबित होगा। •

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

पदाधिकारी (2011-12)

अध्यक्ष

श्री हरिप्रसाद कानोड़िया

फोन : 098300 47977

E-mail : harikanoria@bharatconnet.com

उपाध्यक्ष :

श्री रामअवतार पोद्दार

फोन : 098300 19281

E-mail : rap@wondergroup.in

श्री बद्रीप्रसाद भीमसरिया

फोन : 093349 54040

E-mail : bhimsaribadri@gmail.com

श्री ओम प्रकाश खण्डेलवाल

फोन : 094350 45425

E-mail : khandelwalomprakash@yahoo.com

श्री रमेशचन्द गोपीकिशन बंग

फोन : 094231 01700

श्री संतोष अग्रवाल

फोन : 093291 00963

E-mail : globalindia@hotmail.com

श्री रामकुमार गोयल

फोन : 098852 84848

E-mail : cmd@arclimited.com

महामंत्री

श्री संतोष सराफ

फोन : 098300 21319

E-mail : roadcargo@vsnl.net

संयुक्त मंत्री

श्री संजय हरलालका

फोन : 098300 83319

098041 54115

E-mail : sevasansar@gmail.com

संयुक्त मंत्री

श्री कैलाशपति तोदी

फोन : 098300 44079

E-mail : kptodi@rediffmail.com

कोषाध्यक्ष

श्री आत्माराम सोंथलिया

फोन : 098310 26652

094330 28808

E-mail : jbccsonthalia@yahoo.com

जालना में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन का भव्य अधिवेशन

– संजय हरलालका, राष्ट्रीय संयुक्तमंत्री

अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन के १५वें राष्ट्रीय अधिवेशन में आमंत्रण पर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया के साथ बतौर संयुक्त राष्ट्रीय मंत्री मुझे भी जाने का अवसर मिला। कोलकाता से मुम्बई होते हुए औरंगाबाद से हमें जालना पहुंचना था। मुम्बई पहुँचने में विलम्ब होने के कारण औरंगाबाद के लिए मेरी निर्धारित फ्लाईट छूट गई, इसलिए मैं प्रथम दिवस के कार्यक्रम में शरीक नहीं हो पाया किन्तु

हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष उद्घाटन सत्र के दौरान पहुँच गये।

महाराष्ट्र के जालना शहर में महाराजा अग्रसेन फाउण्डेशन प्रांगण में ७-८ जनवरी २०१२ को आयोजित दो दिवसीय इस अधिवेशन में पूरे देश से महिला प्रतिनिधियों ने भाग लिया। अधिवेशन के प्रथम दिन राष्ट्रीय परिषद् की बैठक, उद्घाटन सत्र, खुला मंच एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुआ। अधिवेशन स्थल पर लघु उद्योग प्रदर्शनी 'व्हिजन २०१२' एवं रेखा महमिया की भ्रूणहत्या विरोधी चित्र प्रदर्शनी बरबस ही सभी को अपनी ओर खींच रही थी। इनका उद्घाटन क्रमशः पद्मश्री शीला झुनझुनवाला एवं श्रीमती सुशीला मोहनका ने किया।

द्वितीय दिन सुबह राष्ट्रीय एकता रैली निकाली गयी जिसने प्रायः पूरे जालना शहर का परिभ्रमण किया। इस

रैली की चर्चा पूरे शहर में देखने को मिली। जिस गली से भी रैली गुजरी वहां मारवाड़ी घरों से पहिलाएं निकलकर उसमें शामिल होती गई। रैली में महाराष्ट्र, उड़ीसा, प. बंगाल, बिहार, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, झारखण्ड, छत्तीसगढ़ से आई हुई महिला प्रतिनिधि समाज सुधारमूलक तख्तियों के साथ शामिल हुईं। इन तख्तियों में एक ओर जहां समाज सेवा, सुधार, भ्रष्टाचार उन्मूलन, भ्रूण हत्या सम्बंधी नारे लिखे हुए थे वहीं पशु-पक्षियों को संरक्षण देने हेतु भी आवाज उठाई गई थी। जुलूस में स्थानीय भेष-भूषा में शामिल मराठी बालकों का बैण्ड समरसता का परिचय दे रहा था। रैली के सबसे अंत में जलती मशाल हाथ में लेकर बग्गी पर सवार थी महिला सम्मेलन की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती स्मिता चेचानी। श्रीमती चेचानी ने सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कानोड़िया से भी बग्गी में

बैठने का आग्रह किया किन्तु कानोड़ियाजी की दिली इच्छा तो कुछ और ही थी। करीब डेढ़ घंटे तक वे पैदल रैली में न सिर्फ चलते रहे बल्कि इस दौरान प्रत्येक प्रांत से आई हुई महिला प्रतिनिधियों से उत्साहपूर्वक मिलते गये और उनके कार्यकलापों के बारे में जानकारी लेते रहे। महिला सदस्याएं

भी हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष से काफी हर्षोल्लास के साथ मिल रही थी। जुलूस में 'जाग गई, भई जाग गई, नारी शक्ति जाग गई', 'श्रेष्ठ संस्कारों से सींचो क्यारी, महक उठे संस्कृति

हमारी', के नारे काफी लुभा रहे थे।

रैली का समापन श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ की धर्मशाला में हुआ। जहां अ. भा. मारवाड़ी सम्मेलन व महिला सम्मेलन का स्वागत संघ के अध्यक्ष श्री विजय कुमार कोठारी व अन्यों ने किया। वहां पर जैन मुनि एवं साध्वी ने अपने वचनों का पान कराया।

रैली के समापन के पश्चात् महाराजा अग्रसेन फाउण्डेशन प्रांगण में राष्ट्रीय पुरस्कार वितरण एवं नूतन राष्ट्रीय अध्यक्षा पदग्रहण समारोह का आयोजन था जिसमें महिला सम्मेलन द्वारा अपनी राष्ट्रीय, प्रांतीय एवं जिला शाखाओं की पदाधिकारियों को विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य के लिए सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम एवं महिला सम्मेलन के कार्यों से श्री कानोड़िया इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने वहीं पर २१ हजार की नकद राशि प्रोत्साहन स्वरूप महिला सम्मेलन की अध्यक्षा श्रीमती चेचानी और उनकी टीम को दी। श्री कानोड़िया ने कहा कि महिलाओं द्वारा किया जा रहा कार्य न सिर्फ प्रशंसनीय बल्कि समाज की महिलाओं के प्रेरणास्रोत भी है। महिला सम्मेलन की पदाधिकारी व सदस्याएं भी अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष को अपने बीच पाकर हर्षित थीं। महिला सम्मेलन ने इस क्षण को ऐतिहासिक बताते हुए कहा कि अब जरूरत है कि एकबद्ध होकर समाज सुधारमूलक कुछ सेवाकार्य हाथ में लें।

इस अधिवेशन में महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. जय प्रकाश मूंधड़ा भी सम्मेलन के स्थानीय प्रतिनिधि श्री वीरेंद्र धोका के साथ पधारे। कुल मिलाकर इस

समागम से समाज सुधार के मामले में टिमटिमा रही लौ पुनः प्रज्ज्वलित होने की आशा जगी। श्री कानोड़िया ने यह भी आशा जताई कि महिला सम्मेलन की नई अध्यक्षा श्रीमती लता अग्रवाल के नेतृत्व में महिला सम्मेलन ओर कारगर कदम उठायेगा।

यहां यह भी गौरतलब है कि गत दिनों कोलकाता में मारवाड़ी सम्मेलन एवं महिला सम्मेलन की बैठक में यह समय की मांग को देखते हुए यह निर्णय लिया था कि मारवाड़ी एवं महिला सम्मेलन सभी स्तर पर एक साथ मिलकर समाज सुधारमूलक कुछ कार्यक्रम हाथ में लेंगे। इस ऐतिहासिक निर्णय की कड़ी में मील का पत्थर साबित होगा आ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष का जालना दौरा, ऐसा माना जा सकता है। बाकी सब कुछ तो भविष्य पर निर्भर है। ●

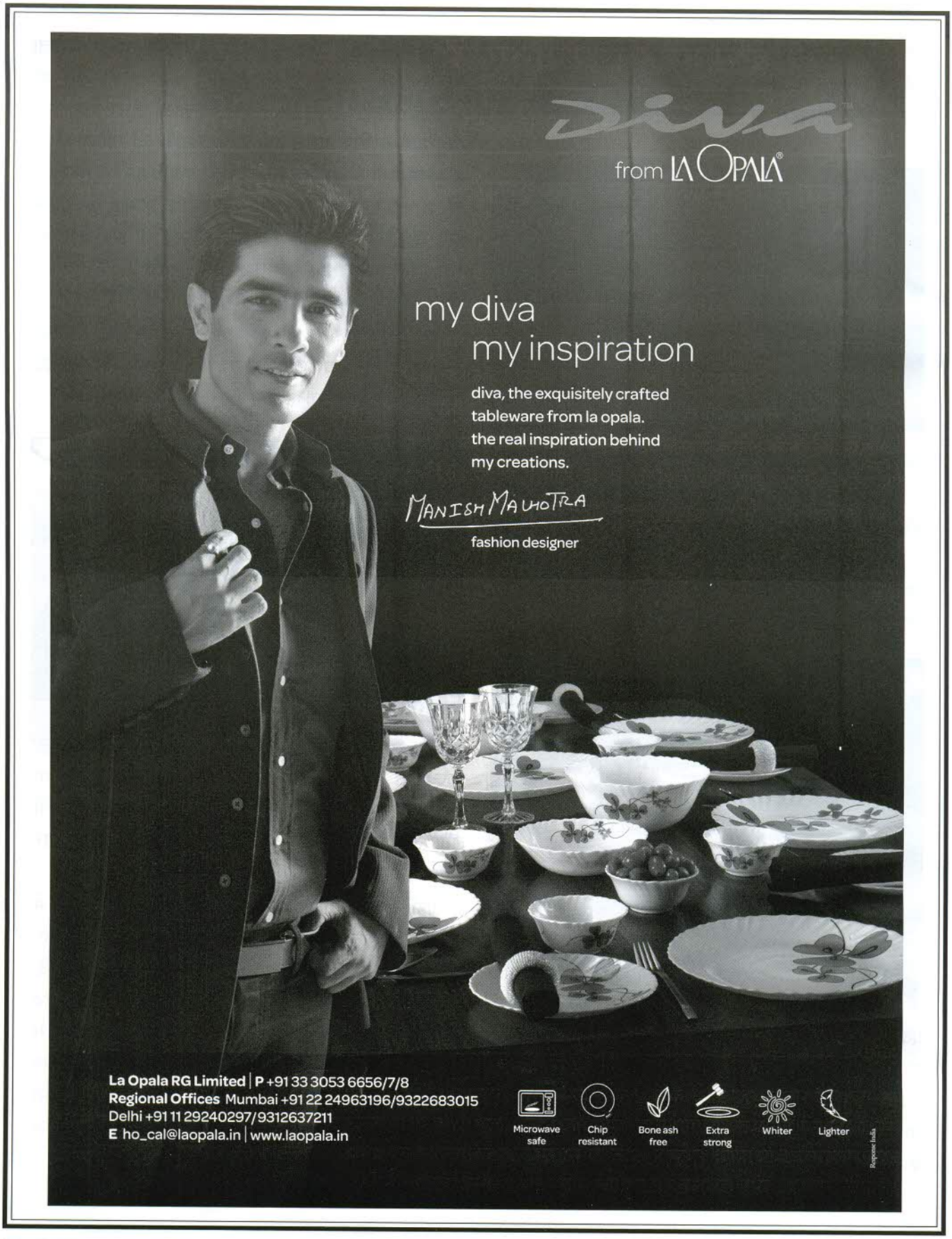
Diva
from LA OPALA®
my diva
my inspiration
diva, the exquisitely crafted
tableware from la opala.
the real inspiration behind
my creations.
MANISH MALHOTRA
fashion designer
La Opala RG Limited | P +91 33 3053 6656/7/8
Regional Offices Mumbai +91 22 24963196/9322683015
Delhi +91 11 29240297/9312637211
E ho_cal@laopala.in | www.laopala.in
Microwave safe
Chip resistant
Bone ash free
Extra strong
Whiter
Lighter

प्रान्तीय समाचार

उत्तराखण्ड

स्थापना दिवस पर कंबल वितरण

उत्तराखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन हरिद्वार द्वारा स्थापना दिवस पर गरीबों, असहायों को कंबल वितरित किए गए। मारवाड़ी समाज के पदाधिकारियों ने चंडीपुल के नीचे स्थित दयालपुरी कुष्ठ आश्रम सहित अन्य आश्रमों में कंबल बांटे। स्थापना दिवस पर पदाधिकारियों ने समय समय पर समाज सेवा के विभिन्न प्रकल्पों को चलाने, कुष्ठ रोगियों के लिए दवा वितरण और अनाथ बच्चों को रोजगारपरक शिक्षा दिए जाने के लिए कार्यक्रम निर्धारित किए हैं। इस दौरान हरेंद्र गर्ग, नरोत्तम केडिया, रंजीत टीबड़ेवाल, दीपक अग्रवाल, आरके चौखानी मौजूद थे।

गौरतलब है चुनाव की आदर्श आचार संहिता प्रभावी होने के बाद संस्था द्वारा गरीबों को कंबल वितरित करने पर जिला प्रशासन ने संस्था को नोटिस देकर जबाव मांगा है। संस्था के पदाधिकारियों का कहना है कि हाड़ कंपा देने वाली ठंड के बीच प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी कंबल वितरण किया।

लघुकथा

दो नम्बर की ईमानदारी...

– केसरीकान्त शर्मा केसरी
मण्डावा, राजस्थान

क्या बेच रहे हो?

आदर्श।

क्या भाव है?

बहुत सस्ता है। आप से क्या मौल-भाव करें, पुराने ग्राहक हैं।

तुम्हारे पास जितना है, सब तौल हो।

सिद्धान्त और चरित्र भी है क्या?

है।

क्या भाव?

फेरीवाले ने झट कहा – कहिए, कितना तौल दूँ?

तुम्हारे पास जितना है, दे-दुवाकर नक्की करो यार।

फेरीवाले ने आदर्श, सिद्धान्त और चरित्र जैसी चीजें पैक कर दीं। उन्हें अपने थैले में डालते हुए ग्राहक ने पूछा –

अरे-रे, नैतिकता भी मिलेगी क्या?

क्यों नहीं, क्यों नहीं। कहें तो सारी तौल दूँ?

हाँ भाई, वह भी दे दो। – मानवीय मूल्य नाम की कोई चीज तुम्हारे पास है क्या?

हाँ - हाँ, क्यों नहीं। कहें तो वह भी दे दूँ।

कितनी है?

बस थोड़ी सी बची है।

उसे भी दे-दुवाकर नक्की करो।

वह आदमी आदर्श, सिद्धान्त, चरित्र, नैतिकता और मानवीय मूल्यों की खरीद कर खुशी - खुशी मुसकराता हुआ जल्दी जल्दी डग भरने लगा, पर थोड़ी ही देर में उसके कोई और चीज ध्यान में आ गई। वह फेरीवाले के पास लौट कर वापस आया।

उसे वापस आते देखकर फेरीवाले के चेहरे पर चमक आ गई। बोला – मालिक, और क्या चाहिए? हुक्म करें, सेवक हाजिर है।

वह मोटा आदमी बोला, अगर तुम्हारे पास ईमानदारी है तो वो भी दे दो – कीमत की कोई बात नहीं है। सर पर हाथ रख, कुछ याद करते-से, मोटे साहसी ने उस फेरीवाले से फुसफुसा कर पूछा – इनकलाव नाम की कोई चीज भी अगर है तो वह भी सारी की सारी खरीद लूँगा।

फेरीवाला चिन्ता में पड़ गया, ग्राहक को ईमानदारी और इनकलाब भी खरीदना है। मुँह मांगी रकम भी देने को तैयार है, लेकिन दे तो कहाँ से दे! यह चिन्ता की बात है।

फेरीवाले को उदास और गुमसुम देखकर उस मोटे आदमी ने पूछा – क्यों भाई! क्या सोचने लग गये, चुप क्यों हो?

क्या बतलाऊँ मालिक, ईमानदारी की तो आजकल फैक्ट्री ही बन्द हो गई। एक नम्बर का माल तो बाजार से बिलकुल गायब है – सप्लाई बन्द है। आज्ञा दें तो दो नम्बर की ईमानदारी और दो नम्बरी इनक्लाब भी तौल दूँ, आजकल इसी का ज्यादा प्रचलन है।•

राजस्थानी व्यंग्य

इक भोत ऊँची क्लास रो लाल बुझक्कड़

– **नथमल केडिया** (साहित्य महोपाध्याय)

आपाँ लालबुझक्कड़जी रो नाँव भोत सुन राख्यो है पर या जानकारी कोनी के वे कुण से गाँव-गोठ रा हा तथा कुणसी तारीख–साल माँय ईं धरा-धाम मै पधार्या। पर वे जिकी ज्ञान री गंगा बहाई वा अद्‌भुत है। रात नै हाथी गाँव सूँ होकर गुजर्‌यो अगुने उन रै पगाँ री छाप जद गाँव हाला रै समझ माँय नी आयी तो इन रै पास आकर पूछ्‌यो जद आ समाधान करयो –

बूझे लाल बुकझक्कड़ और न बूझे कोय।
पग में चक्की बाँधकर हिरणो कूदे होय।

वाह! के मगज पायो हो – एकदम अजायबधर माँय रखण लायक! ये बोल्या करता – किताबाँ माँय लिखेड़ी बात तो कोई बी बोल सकै है, मगज सूँ घड़कर बात तो जिकै रै मगज होवै वो ही बोल सकै।

बैयाँ लालबुझक्कड़ाँ री बी कई क्लास होवै। अजायबघर माँय रखणै लायक एक भोत ऊँची क्लास रो लालबुझक्कड़ म्हारै ग्रूप माँय भी हो। कई बार ईंयाल की दूर कौड़ी ल्यावै कि म्हें सब चकरा ज्यावाँ। जद सरकार समाज सुधारकाँ री ओर सूँ यो प्रचार कर्‌यो जार्‌यो हो, गुरु लोगो नै तथा मास्टराँ नै कीं भी छात्र नै मारणो–कणो नीं चाये, वो दण्डनीय अपराध मान्यो जावैलो, तद सब तो ईं बात सूँ सहमत हा वो एकलो बोलण लागगो – नीं छात्राँ नै वक्त बखत-बेबखत मारनो पीटणो जरूरी है, पैली या कहावत ही – 'गुरु की चोट विद्या की पोट'। ईं को दाखलो रामायण मँ भी मिले है। रामायण माँय भी है, सुनकर तो म्हें सबलोग पुछण लागगा – 'रामायण मँ दाखला री बात कठै है, बता।' तो वो बोलण लागगो 'थे सब लोग रामायण आँख मींचकर भणो। देखो जद हणमानजी सीतामाँ री खोज माँय लंका रै दरवाजै पर पूग्या तो उठै लंकिनी नाम री राक्षसी मिली। वा के बोली सो सुनो –

जानेहि नहीं मरमु सठ मोरा।
मोर अहार जहाँ लगि चौरा।

पर बीजे ई खिन गुरु री चोट लागी

मुठिका एक महाकपि हनी।
रुधिर बमत धरनी ढनमनी।।

और आप देखो विद्या री पोट रो उदाहरण – ऊँका ऊँ ही बखत ज्ञान रा कपाट खुलगा – बोलण लागगी –

तात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरिय तुला एक अंग।
तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग।।

देखो – गुरु री एक चोट रै सागै कित्ता बड़ा ज्ञान रा कपाट खुलगा।

हरि अनन्त हरि कथा अनन्त – ईंयां ई वो म्हारो भायलो एक दिन और बोलण लागगो – थे लोग के या बता सको हो कि रामजी सिवजी रो धनुष कैयाँ तोड़ सक्या। जद कि बाकी रा सै एक सूँ एक बहादुर राजा उणनै – 'तिल भर भूमि न सके छड़ाई।' (ऊँ धनुष नै तिलभर नी सरका सक्या)। ऊँ री बात काना माँय पड़नै रै सागे म्हारी बहस खतम होगी और म्हें सब ऊँ के मुण्डे कानी देखण लागगा। वो भूमिका बाँधणी सुरू करी – 'थे लोग रामायण भणो कोनी, घास खोदो। ईं को रहस्य म्हूँ बताऊँ – बात के होयी आपाँ सै जाणा हाँ। एक दिन सीताजी खेल-खेल माँय वो धनुष उठा लियो और ऊँके नीचे जमेड़ी काई आद साफ करी तद् देख्यो कि एक भोत मजबूत लोहे रै आँकूड़ै सूँ अटको धनुष जाम करेड़ो है। वा कोई ने कुछ परकासो कोनी वापस उइयां की उइयां रख दियो।

राजा जनकजी तो दिनभर साधु-संताँ सूँ घिरा रैता तथा ज्ञान ध्यान की बातां माँय मगन रैता, वे जद सुन्यो कि जिको धनुष आज तक कोई उठा नीं सक्यो ऊँ नै म्हारी बेटी उठा लियो तो वे समइया म्हारी बेटी भोत बहादुर है, वे परतिज्ञा करली कि जिको ईं धनुष नै तोड़ पावै लो ऊँ नै ही बेटी परणाऊँला।'

ऊँ को बोलणौ चालू हो – 'सीताजी उइयाँ तो भोली-भाली दिखती, पर भोत चत्तर ही। उनाँ री सहेलियाँ दिन भर टोह लेती रैती कि कुण कुणसा राजा आज आया है – वै ऊँ की हर तरह सूँ रिपोर्ट लेकर सीताजी नै बतलाती। अधिकतर राजा नापास ही होता। जद विश्वामित्र रै सागै राम लखन आया तो बै आकर तारीफ करी और संजोग इसो बैठ्यो कि बीजे सवेरे वाटिका में देखा-देखी भी होगी। सीताजी रै मन माँय राम जमगा और तद् सहेलियाँ री बी नजर बचाकर पलक झपके इत्ती देर माँय रामजी नै धनुष रै आँकुड़े रो भेद बता दियो। हाँ लखनजी जिका छायां री माफक रामजी रै सागै रैता उणने जरूर पत्तो लागगो।

म्हें लोग तो ऊँ री खोज री बात सुनकर अचम्भे माँय डूब रया हा। पर पूछ्‌यो – 'तनै या कैयाँ मालूम पड्‌यो कै लखनजी जानगा? बो बोल्यो – थ्यावस सूँ सुनो, ईं रो परमाण भी मेरे पास है। देखो! जद जनकजी बोल्या कि आ

धरती बिना बीराँ री है तो लखनजी एकदम उछलगा - ओ धनुष वापरो के बिसात राखै को बापुरो पिनाक पुराना!

नाथ जानि अस आयसु होऊ। कौतुक करो बिलोकिअ सोऊ।
कमलनाल जिमि चाप चढ़ावौं। जोजन सत प्रमान ले धावौं।।

अब थे ई लोग बताओ यदि उणनै भेद नीं मालूम होवतो तो इत्ती बड़बोली थोड़ी बोलता। अर बी उणरी जानकारी रै परमाण री बात सुनो – जद रामजी धनुष रै पास गया तो ये उठै बैठ्या राजा लोग रो ध्यान बटावणणै नौटंकी करी–

दिसि कुंजरहु कमठ अहि कोला। धरहु धरनि धरि धीर न डोला।।
राम चहहिं संकर धनु तोरा। होहु सजग सुनि आयसु मोरा।।

ई तरै धनुस टूटनै माँय नोटंकी जियादा है, बीरता री बात कम है। म्हैं के बोलाँ, म्हारी सब री अकल तो चरने चली गई ही।

चालताँ-चालताँ ऊँ की एक और बात बताकर पुराण री इति करूँ। एक दिन म्हारै स्हैर माँय संगीत रो प्रोगराम हो। गाने हाली एक महिला ही। तीन-चार भजन भोत भाव विभोर होयर गाया। ऊँकै माँय एक भजन हो – 'हरि तुम हरो जनन री पीर।' आती समै रास्तै माँय ही अचाणचुक बोल उठ्यो – 'आ गाने हाली दो–तीन म्हीना रै पेट सूँ है।' म्है ऊँ दिन भोत चकरागा, ऊँ पर गुस्से माँय उबल भी पड्या, पर वो आपरी बात पर डटगो। बाताँ माँ इत्ती कड़वाहट आयगी कि बीजे दिन ऊँ महिला के डेरे माय पुगगा और इयाँ ऊयाँ री बात बणा'र तथा कूड़ बोलकै ये भोत बड़ा ज्योतिसी है उणसूँ पूछ्यो कि ये या बात बोलै है कि आप दो-तीन म्हीना रै गरभ से हो। या बात साची है के?' साच्याणी ऊँ दिन म्है सब आभै सूँ गिरगा जद बा नीची नाड़ करेड़ी बोली – सांची बात है।

पर ऊँ के बाद तो म्हारी जान साँसत माँय आयगी जद बा तथा ऊँ को घरहालो दोनूँ म्हारै भायले री आव-भगत माँय लगगा और तरै-तरै री बात पूछण लागगा – छोरो होसी के छोरी आद आद।

रास्तै माँय उणै पूछ्यो – 'तूँ कैयाँ या बात जाण्यो?' वो रोज री माफक आपरी हेकड़ी दिखातो बोल्यो – 'बाल भजन तो चार–पाँच गाया पर यो भजन – हरि तुम हरो जननी की पीर – जीत्तो डूबकर गायो ऊँ से ही हूँ समझ लियो कि यू गरभ सूँ है।' सुनकर म्है सब आप–आपरो माथो पीट लियो तो तूँ हरो जनन (भगत लोगाँ री पीर) ने टाबर जनणै होने हाली पीर समझ ली! म्हें आपणै कयो हो, म्हारो भायलो भोत ऊंची क्लास रो लालबुझक्कड़ है या बात आप भी मानो हो न। (साभारः हास्यम् - व्यग्यम)

– ४ए, शंभुनाथ पंडित स्ट्रीट, कोलकाता

आपके विचार

"समाज विकास" अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र है जो गत ६१ वर्षों से कोलकाता से प्रकाशित किया जा रहा हैं।

सम्मेलन के मुख्य उद्देश्य हैं समाज सुधार, समरसता एवं राष्ट्रीय एकता। समाज के साहित्यिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विकास हेतु विभिन्न पहलुओ पर "समाज विकास" के माध्यम से चर्चा आयोजित की जाती है।

समाज सुधार एवं समरसता के अन्तर्गत देहज-दिखावा, आडम्बर, फिजूलखर्ची, विधवा विवाह, बढ़ते तलाक, टूटते परिवार, गिरते सामाजिक एवं नैतिक मूल्य, अर्न्तजातीय विवाह, वृद्धाश्रम क्यों, आदि विषयों पर विचार-विवेचना "समाज सुधार" के माध्यम से करने का प्रयास किया जाता है।

आपके विचारों को प्रकाशित कर हमें हार्दिक प्रसन्नता होगी।

सीताराम शर्मा
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
एवं
सम्पादक, समाज विकास

समाज विकास में वर-वधू परिचय

आपकी पत्रिका 'समाज विकास' ने एक नये 'वर-वधू परिचय' स्तम्भ के अन्तर्गत वैवाहिक सम्बंधों हेतु संक्षिप्त वर-वधू परिचय का निःशुल्क प्रकाशन आरम्भ किया है।

इच्छुक अभिभावकों से अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्री का नाम, शिक्षा, उम्र, जाति, गौत्र, कद, रंग आदि विवरण सम्पादक, समाज विकास, १५२बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता - ७०००००७, फोन व फैक्स ०३३-२२६८ ०३१९ के नाम आमंत्रित है।

नाम : **सुमित कुमार अग्रवाल** (३९ वर्ष)
पिता का नाम : श्री राधेश्यम अग्रवाल
शिक्षा : बी कॉम, सीए
पेशा : सीए प्रैक्टिस
गौत्र : गोयल,
कद : 5' 7½", रंग – साफ
निवास : २०३, समाचार ऑपार्टमेंट्स
मयूर विहार, फेज - I, दिल्ली-९१

नाम : **पुरुषोत्तम शर्मा** (नरेरा) २८ वर्ष
पिता का नाम : स्व० गोविंद राम शर्मा
शिक्षा : ग्यारह (आर्ट)
पेशा : कृषि एवं इलेक्ट्रिकल्स बिजनेस
गौत्र : भारद्वाज
कद : 5' 2", रंग – सांवला
निवास : श्रीमती शारदा देवी शर्मा
रंगिया, कामरूप, आसाम

नाम : **अखिल पोद्दार** (३० वर्ष)
पिता का नाम : श्री विनोद कुमार पोद्दार
शिक्षा : बी कॉम (ऑनर्स)
पेशा : मेडिकल स्टोर (डिब्रूगढ़)
गौत्र : बंसल, कद - 5' 5"
निवास : पोद्दार हाउस
के पी रोड, डिब्रूगड़
(आसाम)

नाम : **अरविंद कुमार मोदी**
पिता का नाम : श्री भँवरलाल मोदी
शिक्षा : बीकॉम
पेशा : सर्विस
गौत्र : गोयल
कद : 5' 4", रंग – सांवला-साफ
निवास : द्वारा श्री अजित कुमार चक्रवर्ती
सितला पाड़ा रोड, शांतिगढ़
श्याम नगर, उत्तर २४ परगना (प.ब.)

नाम – **अनूप कुमार अग्रवाल** (२६ वर्ष)
पिता का नाम – श्री रतन लाल अग्रवाल
शिक्षा – बी. कॉम
पेशा – मोबाइल रिपेयरिंग व जिरॉक्ट
जाति – मारवाड़ी, गौत्र - मंगल
कद – ५' ४", रंग-साफ
पैतृक निवास – क्षेत्री
निवास – लक्ष्मी ऑपार्टमेंट
१, हरकत फर्स्ट बाई लेन
कल्पना सिनेमा के पास, हावड़ा

नाम – **विक्रम सारड़ा** (३४ वर्ष)
पिता का नाम – स्व. सुन्दर लाल सारड़ा
शिक्षा – माध्यमिक
पेशा – इंश्योरेंस ऐजेंट
जाति – माहेश्वरी
गौत्र – थोबडांस
कद – ५' ६", रंग - साफ
पैतृक निवास – गंगाशहर (बीकानेर)
निवास – २४, ब्रोजोदुलाल स्ट्रीट
कोलकाता - ७

कविता

शिव सारदा

(१)

वो
दिन भर लड़े
सांप
और नेवले
की तरह
वो रात भर
लड़े
सांप
और नेवले
की तरह
वो कई दिन लड़े
सांप और
नेवले की तरह
कई राद
काई दिन
लड़े
और
आखिर में
नेवले ने
सांप को
कुतर डाला
मदारी
लड़ाई के
इस अंत से
परीचित है,
नेवले की
सोच को
सांप सूंघ गया।

(२)

हम
किसान है
दुनिया को
अन्न देते है

हम
मजदूर है
विश्व के
विकास से
जुड़े है

लेकिन
आज भी
भीख मांग कर
खाते है

हमारे पास
बंदूक
और बारूद
दोनो है
किंतु
क्रांति का जज्बा
कहीं खो गया है।

SMS की दुनिया

देश-दुनिया-समाज के घटनाक्रमों पर बेहतरीन समाज की उपज का जायका आपको घर बैठे SMS पर मिलता है। कुछ को आप तुरन्त Delete करते है तो कुछ को मित्रो को Forward करते है। SMS बन गया है अपने अच्छे-बुरे दिलचस्प विचारों को सीधे आपके पास पहुंचाने का नायाब तरीका।

SMS की दुनिया में हम पाठकों से मजेदार, जायकेदार, तेज-तर्रार SMS समाज विकास को Forward करने के लिये आमंत्रित करते है जिन्हें हम Sender के नाम के साथ प्रकाशित करना चाहेंगे।

– सम्पादक, समाज विकास

चुपके से सुनो
धीरे से गिनो
इक छोटी सी बात
हो गयी है रात
सो जाओ प्यार से
सपनों के साथ
बंद करो **Light**
मुझे आपसे कहना है
Good Night

• • •

वक्त गुजर रहा है पर साँसे थमी सी है
मुस्कुरा रहे है पर आंखों में नमी सी है
साथ हमारे ये जहान है सारा
पर न जाने क्यों किसी की कमी सी है।

• • •

Nothing is Old,
Nothing is New
Just A matter of point of view
Enjoy life As Happy Days Are Few,
Because if life is an Ocean
Then Happy moments Are Like Dew.

• • •

Heart touching lines by a married man :

मांग भरने की सजा कुछ इस प्रकार पा रहा हूँ।
कि मांग पूरी करते करते अब मांग-मांग कर खा रहा हूँ।

पक्षी चमन छोड़ देंगे
सितारे गगन छोड़ देंगे
तेरे इश्क में मर भी जाए अगर
दिल से पुकार लेना
हम कफन छोड़ देंगे।

• • •

The Greatest Mistake
We Human make is in
our Relationships:
We listen HALF,
understand QUARTER
Think ZERO
& react DOUBLE

• • •

A good pathology
has 3 parts
I am sorry
It's my fault &
What Can I do
to make it Right
But most of the people
misses the 3rd part.

पुस्तक समीक्षा

चाँद के माध्यम से सामाजिक समस्याओं के निराकरण की कोशिश

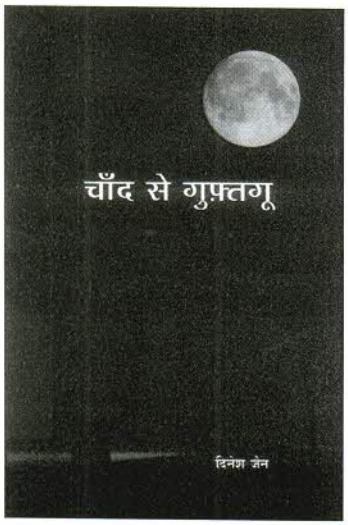

अर्थ और लेखनी खासकर काव्य रचना का विपरीत संबंध है। काव्य के लिए मन में संवेदना का होना जरूरी है जबकि अर्थ की लिप्सा मनुष्य को संवेदनहीन बनाती है। आज के पारिवारिक और सामाजिक माहौल में तो हम सब यही देख रहे हैं। लेकिन कोलकाता के कवि दिनेश जैन ने साबित कर दिया है कि जज़्बा हो तो अर्थ से जुड़ा व्यक्ति भी मानवीय अर्थ को नया आयाम दे सकता है। वह व्यवसाय में रहकर भी अध्यवसाय को अपनाए रह सकता है। आर्थिक जगत से सीधे तौर पर जुड़े दिनेश जैन की काव्य पुस्तक **"चाँद से गुफ्तगू"** इसी का उदाहरण है।

कवि दिनेश जैन की चाँद पर आधारित काव्य रचनाओं का संकलन **"चाँद से गुफ्तगू"** वार्तालाप की शैली में रचित एक अद्‌भुत रचना है। कवि ने चाँद से वार्तालाप के माध्यम से वर्तमान समाज में व्याप्त भ्रांतियों और सामाजिक विषमता के कारकों पर तीखा व्यंग्य किया है। संप्रति काव्य की जो धाराएँ प्रचलित हैं यह पुस्तक उनसे जरा हटकर है।

जैसा की पुस्तक के नाम से ही स्पष्ट है कि यह पुस्तक चाँद को आधार बनाकर रची गयी है। अपने आमुख में ही कवि स्पष्ट कर देता है कि क्यों उन्होनें चाँद को ही अपनी भावनाओं के सम्प्रेषण का माध्यम बनाया।

चाँद प्राचीन काल से ही कवियों के लिए प्रेरणा का स्रोत रहा है। हिन्दी में चाँद को बच्चों के मामा के रूप में खूब प्रचारित किया गया तो उर्दू में कवियों ने प्रेयसी के रूप में चाँद की कल्पना की। भले ही मानव ने चाँद पर अपने कदम रख दिये हों लेकिन आज भी चाँद को प्रतीक बनाकर रचनाएँ लिखने वाले कम नहीं हैं। हाफ़िज़ होशियारपुरी की एक मशहूर ग़ज़ल की पंक्तियाँ हैं :

दिलों की उलझनें बढ़ती रहेंगी
अगर कुछ मशवरे बाहम न होंगे

मशवरा इंसान की फितरत होती है। मामला कोई भी हो, कैसा भी हो इंसान मशवरा के माध्यम से उसका हल निकालने की कोशिश करता है।

दिनेश जैन

हमारी जिंदगी में समस्याएँ अनंत हैं। पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक सभी क्षेत्र में छोटी-बड़ी समस्याएँ चलती रहती हैं। कुछ ऐसी समस्याएँ भी होती हैं जिनका हल निकालना मुश्किल होता है क्योंकि ये इंसानी जज़्बातों से ऐसे जुड़ी होती हैं कि इन्हें एकतरफा समाधान की ओर ले जाना कठिन होता है। तमाम समस्याओं से जूझते हुए इंसानी जिंदगी अपने मंज़िल की ओर चलती जाती है। "चाँद से गुफ्तगू" में कवि ने जिस तरह परिवार और समाज की समस्याओं को एक-एक कर उकेरा है और समाधान की पहल की है वह एक शब्द में प्रशंसनीय ही नहीं अनुकरणीय है।

पुस्तक को पढ़ते समय शब्दों की निरंतरता कमाल की है। एक बार शुरू करके बिना खत्म किए कोई रुक नहीं सकता। यह इस पुस्तक की सबसे बड़ी खूबी है।

कवि ने एक-एक कर सामाजिक समस्याओं को चाँद के समक्ष रखा है और चाँद के माध्यम से उसका समाधान प्रस्तुत किया है। सामयिक समस्याओं पर चाँद का करारा व्यंग्य देखिये :

सत्य को अंगीकार / करना सीखो /
यथार्थ को स्वीकार / करना सीखो
दुःख व सुख को / सम भाव से रह कर /
हर हाल में / खुशहाल रहना सीखो

कुल १० अध्यायों में कवि ने विभिन्न मुद्दे उठाए हैं, मसलन, विरह-वेदना, चाँद पर दाग, समय की कीमत, चाँद में रोशनी, रोशनी का रंग, चाँद का धर्म, पूर्णिमा से अमावस्या तक चाँद का सफर, सूर्य का शौर्य, चाँद पर मानव और चाँद की अविराम यात्रा जैसे अध्यायों के माध्यम से कवि ने अपनी भावनाएं व्यक्त की हैं और प्रत्येक अध्याय एक नयी समस्या को लेकर विचार-विमर्श का अवसर प्रदान करता है।

पुस्तक : चाँद से गुफ्तगू
लेखक : दिनेश जैन
प्रकाशक : पाटनी पब्लिशिंग हाउस, कोलकाता
मूल्य : २०० रुपए मात्र, पृष्ठ : ११० (सजिल्द)

शादी-विवाह की रस्मों को महँगा न करें : खुशबू बंसल

फिर से विवाह लग्नों का समय आ गया है। शादी-विवाह शुरू हो चुके हैं। ऐसे में कई लोग अपनी बेटी या बेटे के विवाह में महँगे निमंत्रण पत्र (जिनका मूल्य हजारों में पहुँच चुका है) बँटवाकर विवाह को एक आलीशान रूप देने की कोशिश करते हैं परन्तु मेरी समझ में निमंत्रण पत्र साधारण या महँगा होने से विवाह में कोई विशेष फर्क नहीं पड़ता है। हमारे समाज के चंद रईसों का यह शौक है कि वो निमंत्रण पत्र के माध्यम से अपने विवाह की भव्यता को दर्शाना चाहते हैं। हमारे समाज में बहुत से ऐसे लोग भी हैं जो सामाजिक संस्थाओं, उद्योग जगत या उच्च श्रेणी के क्लब के सदस्यों की सूचियाँ मँगवाकर उनमें निमंत्रण पत्र वितरीत करवा देते हैं। इस प्रकार वो ऐसे लोगों को विवाह में आमंत्रित करते हैं जिनसे वे वास्तव में परीचित ही नहीं है। इसमें उनकी क्या मानसिकता होती हैं यह तो मुझे पता नहीं परन्तु मेरी समझ में विवाह जैसे धार्मिक कार्यक्रम को अपने वैभव का प्रदर्शन करने का माध्यम नहीं बनाना चाहिए। हमारा समाज धर्म के प्रति एक जागरूक समाज माना जाता है। इस समाज में किसी भी कार्य की शुरूआत से पहले सभी देवी – देवताओं व अपने पित्रों का आह्वान किया जाता है। विवाह भी एक ऐसा ही धार्मिक आयोजन है जिसमें एक नया जोड़ा अपने दाम्पत्य जीवन का प्रारम्भ करता है तथा इसके साथ ही दो परिवारों का पारस्परिक मिलन भी होता है। परन्तु आजकल विवाह जैसे धार्मिक कार्यक्रम के अवसर पर मद्‌पान व कोकटेल पार्टी का आयोजन किया जाने लगा है जिसके दुष्परिणामस्वरूप हमारे समाज में भी अन्य समाजों की तरह तलाक व आत्महत्या जैसी दुर्घटनाएँ होने लगी है। इसका प्रमुख कारण विवाह में होने वाला भौंज प्रदर्शन, मद्‌पान, आडम्बर ही हैं जिसके कारण नव दम्पति को अपने कुल के देवी-देवताओं व पित्रों का पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त नहीं हो पाता है। मेरा समाज के लोगो से निवेदन है कि आप रीति-रिवाजों को महँगा न करें। यहाँ मेरा तात्पर्य यह कदाचित नहीं है कि आप अपनी पुत्री या पुत्र के विवाह में सामर्थ्यवान होते हुए भी खर्च न करें परन्तु जो विवाह की आवश्यक रस्में होती हैं जिसे समाज के सभी वर्गों के लोगों के लिए निभाना अनिवार्य होता है, उनको महँगा न करें। इन्हीं आवश्यक रस्मों में एक है मिलनी, यह मिलनी शब्द सुनने में तो बहुत छोटा लगता है परन्तु यह दो परिवारों के प्रमुख सदस्यों का मिलन है जिसे मिलनी के रूप में चार रूपयें का पारस्परिक आदान-प्रदान करके निभाया जाता था। परन्तु ऐसी रस्मों को हमारे समाज के ठेकेदारों ने चाँदी व सोने की सिल्लीयों में परिवर्तित कर दिया है, जिससे समाज के अन्य वर्ग इन रस्मों को निभाने में स्वयं असमर्थ पाकर हीनता का अनुभव करने लगते हैं। मेरा अनुरोध है कि २०१२ में समाज का प्रत्येक वर्ग यह संकल्प लें कि शादी-विवाह जैसे पवित्र कार्यक्रमों में दिखावा व मद्‌पान पूर्ण रूप से निषेध हो। धन के अहंकार में हमारा समाज जिस भौंडे प्रदर्शन की होड़ में लगा है वही हमारे लिए घातक सिद्ध होता जा रहा है। इसी अहंकार के सम्बन्ध में मैं महाराजा शूरसेन की एक कहानी का उल्लेख संक्षिप्त में करना चाहूँगी। एक बार राजा शूरसेन ने अपने राज्य की समृद्धी एवं विस्तार के लिए ऋषि याज्ञवलभ्य के आश्रम में जाकर विशेष यज्ञ करने का विचार किया और पूरे लाव-लश्कर के साथ कई रथों में हवन सामग्री, खाद्य, फल, मिठाईयाँ, वस्त्र इत्यादि लेकर ऋषि के आश्रम पहुँचे। परन्तु ऋषि ने इन व्यर्थ के प्रपंचों के साथ राजा को देखा तो खिन्न होकर कहा कि – "हे राजन! आप यहाँ यज्ञ करने आए हैं या अपने वैभव का प्रदर्शन करने। इस यज्ञ को करने के लिए न्यूनतम सामग्री एवं अपेक्षित मानसिक तैयारी की आवश्यकता है। इसके लिए सर्वप्रथम आपको अपना अहंकार त्यागना होगा, तभी यह यज्ञ सफल हो पाएगा।" यह सुनकर राजा को अपनी गलती का एहसास हो गया और उन्होंने ऋषि से क्षमा माँगी। ●

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

उच्च शिक्षा कोष
आवेदन पत्र आमंत्रित

समाज में उच्च एवं तकनीकी शिक्षा को प्रोत्साहित एवं सहयोग प्रदान करने हेतु अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अन्तर्गत एक **"उच्च शिक्षा कोष"** का गठन किया गया है।

मेधावी एवं जरुरतमन्द छात्र-छात्राओं से उच्च (पोस्ट ग्रेजुएट) प्रबन्धन, तकनीकी आदि शिक्षा में सहयोग के लिये आवेदन पत्र आमंत्रित है। उक्त आवेदन पत्र का प्रान्तीय अथवा जिला सम्मेलन शाखाओं द्वारा अनुमोदित होना आवश्यक है।

आवेदन पत्र में नाम, पूरा पता, फोन, ईमेल, शिक्षा, अभिभावक की वार्षिक आय के साथ जिस उच्च शिक्षा के लिये सहयोग प्रार्थित है उससे सम्बन्धित सभी विवरण, कोर्स शुल्क, सहयोग राशि आदि जानकारी भेजने की कृपा करें।

अतिरिक्त जानकारी के लिये सम्पर्क करे –

महामंत्री, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
१५२-बी, महात्मा गांधी रोड
कोलकाता - ७०० ००७
फोन एवं फैक्स – ०३३-२२६८०३१९।

हरिप्रसाद कानोड़िया
अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

प्रह्लाद राय अग्रवाल
अध्यक्ष, उच्च शिक्षा
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

उच्च शिक्षा कोष में मुक्त हस्त दान दें – ८०जी के अन्तर्गत कर मुक्त
Cheques may be issued in favour of "Marwari Sammelan Foundation".

viom
NETWORKS

A Leading Telecom Infrastructure Company Globally

Independent entity with over 38,000 towers and over 89000 tenants

Plans to roll-out nearly 20-25,000 additional towers and take tenancy ratio to 2.5x

Strongest player in neutral host Shared In-Building Solutions (IBS)

First Indian Telecom Infrastructure Company to receive ISO 14001 & OHSAS 18001 Certification

Viom Networks Limited
Corporate Office : 14 & 15th Floor, DLF Square, Jacaranda Marg, DLF City, Phase 2, Gurgaon - 122 002. India

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2010-2012
Date of Publication - 28 January, 2012
RNI Regd. No. 2868/68

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319
E-mail : aimf1935@gmail.com

T/WB/LM-887
SRI KAILASHPATI TODI (L.M.)
JOINT GENERAL SECRETARY, A.I.M.F
16, KISHANLAL BURMAN ROAD
BANDHABHAT, SALKIA
HOWRAH- 711106